तुलसी – एक पवित्र पौधा

वर्षः 2025

तुलसी की दिव्यता को समर्पित यह पुस्तक पौधे के औषधीय पुरातन उपयोगिता के सारांश प्रस्तुतिकरण के साथ–साथ ही भारतीय संस्कृति एवं सनातन परंपरागत तुलसी वृक्ष के धार्मिक और आध्यात्मिक महात्म्य का रोचक विवरण तथा कुछ आधुनिक समसामयिक विषयवस्तु के समावेषण सहित ''तुलसी–एक पवित्र पौधा'' आप सभी महात्म जनों के अनुग्रह सवरूप प्रकाशित है !!!''

आनंद धर द्विवेदी

लेखकः आनंद धर द्विवेदी
वर्षः 2025
प्रकाशनः एपीए सिलिकॉम
पताः ग्राम–तिलया, पो,आ,– लासा, हनुमना, रीवा, म,प्र,.

पिन–486335
मोबाइल नम्बरः– +91–9981390093

मूल्यः 125रू

तुलसी – एक पवित्र पौधा

वर्षः 2025

लेखकः आनंद धर द्विवेदी
संपादकः सुरेन्द्र द्विवेदी

प्रकाशकः
स्व प्रकाशन–आनंद धर द्विवेदी
पताः ग्राम–तिलया, पो,आ,– लासा, हनुमना, रीवा, म,प्र,.
पिन–486335
मोबाइल नं.: +91–9981390093
ईमेलः - anandddwi@gmail.com
वेबसाइटः www.apasilicom.com

कॉपीराइटः ''कॉपीराइट –2025 आनंद धर द्विवेदी।
सभी अधिकार सुरक्षित।''
आईएसबीएनः 978–93–344–3483–5

डिस्क्लेमरः

"तुलसी विषय पर संकलित यह कार्य केवल संज्ञानार्थ है।कृप्या प्रमाणिकता हेतु संबंधित संदर्भ का अवलोकन करें।"

लेखक परिचय

श्री रामानंदाचार्य परंपरा अंतर्गत श्रीमद् राम हर्षण दास जी महाराज के परम प्रिय शिष्य जगत गुरु श्री श्री वल्लभाचार्य महाराज जी के द्वारा दास आनंद धर द्विवेदी को चरण आशीर्वाद दीक्षा के रूप में प्रदाय उपरांत तुलसी की महिमा को बताया गया एवं जीवन पर्यंत तुलसी कंठी के धारण तथा तुलसी माला जप का आदेश गुरु दीक्षा के अंतर्गत दिया गया।मैं अटूट भक्ति के साथ, सांसारिक कर्तव्यों और आध्यात्मिक सेवा के बीच संतुलन बनाते हुए, अपना जीवन तुलसी कंठी और तुलसी माला को समर्पित करता हूँ।

यह पुस्तक, 'तुलसी – एक पवित्र पौधा', श्री गुरु के चरणों में एक विनम्र अर्पण है, जिसका उद्देश्य दुनिया भर के विद्वानों और भक्तों के लिए तुलसी की महिमा को प्रकाशित करना है।

मुझे आशा है कि मध्य प्रदेश और उसके बाहर के पाठक अपने घरों में तुलसी का पौधा लगाएँगे और स्वास्थ्य, शांति और समृद्धि के लिए इसके दिव्य आशीर्वाद को ग्रहण करेंगे।

ईश्वर से सर्वे भवन्तु सुखिनः की मंगलकामना के साथ–साथ ही, मैं इस कार्य को और अधिक निखारने के लिए आपका आशीर्वाद और प्रतिक्रिया चाहता हूँ, ताकि तुलसी की पवित्र विरासत सदैव चमकती रहे।

"तुलसी – एक पवित्र पौधा" पुस्तक का खुले दिल से अध्ययन करने के लिए एवं सर्व कल्याण की भावनात्मक अभिव्यक्ति के समर्थन हेतु साधन्यवाद। नमस्कार!!

आनंद धर द्विवेदी

प्रस्तावना

यद्यपि यह सर्वविदित है कि तुलसी एक मातृत्व गुण युक्त औषधीय वृक्ष प्रजाति है एवं तुलसी का पौधा प्रायः हम सभी ने गृह आंगन में, देवालयों में, तथा रोग उपचार के प्रमुख औषधि के रूप में, देखा जाना है। साथ ही तुलसी का आध्यात्मिक तथा धार्मिक महत्व सर्वमान्य तौर पर भी स्वीकार्य किया गया है। तुलसी पौधे का विवरण भारतीय धर्म शास्त्रों एवं पुराणों आदि में भी प्रमुखता से है।

अतः तुलसी विषय पर अतिरिक्त लेख अपरिहार्य है तथापि वर्तमान के परिदृश्य अंतर्गत कुछ तथ्यों का तुलसी पौधे के सह–संबंध में प्रस्तुत किया जाना एक सर्वोपयोगी विषय है।

" **तुलसी – एक पवित्र पौधा** " रूपी इस प्रस्तुति में यही प्रयास है कि आज के विस्तृत आधुनिक वैश्विक समाज तक, आदि पुरातन ज्ञान और अनुभव को, वर्तमान एवं भविष्य की उपयोगिता के अनुरूप, पवित्र तुलसी पौधे की दिव्यता एवं मानव जीवन के लिये इसकी महत्ता को सर्वसुलभ एवं सरल रूप में प्रकाशित किया जाय

ईश्वरीय आशीर्वाद रूप में पुस्तक लेखन का प्रारंभिक विचार, मार्गदर्शन स्वरूप श्री कन्हैयालाल पाण्डे जी की प्रेरणा, तथा श्री एसुरेन्द्र द्विवेदी जी एवं श्री देवेन्द्र धर द्विवेदी जी के द्वारा, लेखन के दौरान के कमजोर एवं कठिन क्षणों में प्रदान किए गये उपयुक्त सहयोग के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए, " **तुलसी – एक पवित्र पौधा** " सर्वे भवन्तु सुखिनः की मंगल कामना के साथ आप तक प्रस्तुत है।

समर्पण

“ यह पुस्तक समर्पित है मेरी पूज्य माता जी श्री मती शान्ति द्विवेदी, जिनकी कृपामयी मातृत्व आाशीर्वाद की शीतल छाया ने सदैव मन के जीवन अनुक्रम के नवीन आयाम को अनुरूप एवं सतत बनाया है।”

संदेश (आचार्य)

" **तुलसी – एक पवित्र पौधा** " तुलसी जी पर प्रस्तुत यह पुस्तक, अपने सभी विषय विस्तार के साथ ही, तुलसी पौधे के लगभग संपूर्ण अनिवार्य तथ्यों को समाहित करते हुए अपने शीर्षक के अनुरूप ही, श्री तुलसी जी की महत्ता का अद्वितीय एवं संक्षिप्त विवरणात्मक प्रस्तुतीकरण है।

यद्यपि तुलसी जी की मौलिकता का समुचित समावेश किया गया है तथापि **तुलसी के दिव्य गुण** एवं **तुलसी का धार्मिक महत्व** नामक अध्याय खंड " **तुलसी – एक पवित्र पौधा** " पुस्तक की मूल आत्मा को प्रदर्शित करते हैं।

साथ ही जन सामान्य के संज्ञेय **तुलसी एवं निधिवन–वृंदावन** तथा **तुलसी महात्म्य विवेचन** रूपी अध्याय खंड संकलन विशेष रूप से सराहनीय प्रयास है।

जैसा कि श्री तुलसी जी का महात्म्य है, तदनुसार स्पर्श, दर्शन, कथन, एवं श्रवण आदि से भी, जीवात्मा को पुण्य लाभ होता है। चूंकि " **तुलसी – एक पवित्र पौधा** " तुलसी जी के वर्णन का विषय है, अतः शुभेच्छा एवं मंगल कामना के साथ, अध्ययन हेतु यह पुस्तक आप सब के समक्ष, मानव समाज कल्याण की भावनात्मक अभिव्यक्ति के साथ प्रकाशित है।

ज.गु.रा. श्री वल्लभाचार्य

श्रीमद् जगद्गुरू रामानंदाचार्य श्री श्री १००८

स्वामी श्री श्रीवल्लभाचार्य जी महाराज

साभार

लेखन एवं संपादन, किसी भी पुस्तक प्रस्तुतीकरण के लिए विशेष चुनौती भरे दायित्व होते हैं, विशेषकर संपादन, अधिक चुनौती का कार्य है। उदाहरणार्थ तुलसी दल पूजा प्रसाद में प्रयुक्त होने पर मन को, तथा वैद्य–चिकित्सक द्वारा प्रयोग होने के समय स्वास्थ्य को, ठीक करने का काम करते हैं।

उपरोक्त से आशय यह है कि किसी भी विषय वस्तु के संकलन के समानांतर ही प्रस्तुति भी चुनौती पूर्ण कार्य है। विशेषतः औषधीय आध्यात्मिक तथा धार्मिक आदि गुण एक साथ रखने वाली तुलसी पौधा प्रजाति का सरल एवं सर्वसुलभ स्वरूप में प्रस्तुतीकरण का यह कार्य, सौभाग्य स्वरूप, मेरे द्वारा विशेष अभिरुचि के साथ स्वीकार्य है।

" **तुलसी – एक पवित्र पौधा** " पुस्तक अंतर्गत चित्र संकलन, विषय अनुक्रम, एवं वाक्य प्रयोग इत्यादि, समाज के सभी वर्ग के जनमानस के अनुरूप एवं सुलभ कलेवर में प्रस्तुत करने के अनुसार ही संपादित हैं।

आशा एवं विश्वास तथा पवित्र तुलसी पौधे की महत्ता के प्रति श्रद्धा भाव के साथ ही संभावित त्रुटि सुधार की शुभकामना के आग्रह अनुरोध सहित यह पुस्तक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

श्री सुरेन्द्र द्विवेदी

तुलसी – एक पवित्र पौधा

विषय–तालिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
01	तुलसी सामान्य परिचय	01–05
02	तुलसी पौध प्रजाति	06–12
03	तुलसी पौध प्रकार	13–36
04	तुलसी आध्यात्मिक वृक्ष	37–46
05	तुलसी पवित्र पौधा	47–50
06	तुलसी के दिव्य गुण	51–56
07	तुलसी आयुर्वेदिक महत्त्व	57–65
08	तुलसी एवं आधुनिक चिकित्सा	66–74
09	तुलसी एवं पौध रोपणी	75–94
10	तुलसी व्यवसायिक कृषि	95–108
11	तुलसी एवं निधिवन वृंदावन	109–116
12	तुलसी धार्मिक महत्व	117–124
13	तुलसी महात्म्य विवेचन	125–135
00	संदर्भ विषय–वस्तु	138–146

01.तुलसी सामान्य परिचय

तुलसी स्वयं एक वरदानिक एवं सामान्य से परे, दिव्य गुणों से भरपूर, औषधीय, धार्मिक, वास्तु, इत्यादि पौधा है। अतः सामान्य परिचय कहना अपने आप में तुलसी के महत्व के अनुरूप अनुपयुक्त कहलाएगा। तथैव जन सामान्य के प्रारंभिक परिचय से संबंधित विषय उल्लेख हेतु, तुलसी के विषय में प्रारंभिक बातें इस प्रकार हैंः–

नाम – तुलसी

अंग्रेजी नाम – होली बेसिल

वानस्पतिक नाम – ओसिमम बेसिलिकम

वैज्ञानिक नाम – ओसिमम लैमिआसी

पादप कुल – लैमिआसी

पादप जाति – ओसिमम

उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र

उष्णकटिबंधीय क्षेत्र, उष्ण कटिबंध या उष्णकटिबंधीय क्षेत्र को संदर्भित करता है जो, भूमध्य रेखा के आसपास स्थित अत्यधिक गर्मी और आर्द्रता वाला क्षेत्र है।

उष्ण कटिबंध की विशेषतायें

स्थानः

यह क्षेत्र भूमध्य रेखा के आसपास, कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच स्थित है।

जलवायुः

यहाँ उच्च तापमान और आर्द्रता होती है, जिसके कारण अत्यधिक गर्मी और अक्सर भारी वर्षा होती है।

मौसमी घटनायेंः

उष्ण कटिबंध वह क्षेत्र है जहाँ गर्म समुद्री जल, उच्च नमी और वायुमंडलीय दबाव प्रणालियों, जैसे कि अंतर–उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र की परस्पर क्रिया के कारण उष्णकटिबंधीय चक्रवात जैसी घटनायें विकसित होती हैं।

वनस्पति और जीवः

उष्णकटिबंध की अनूठी जलवायु दुनिया के अन्य हिस्सों की तुलना में विशिष्ट प्रकार के पौधों और जानवरों को आश्रय देती है।

तुलसी का पौधा

पादप कुल–लैमिआसी एवं पादप जाति–ओसिमम अंतर्गत, सामान्य तुलसी के साथ–साथ अन्य तुलसी प्रजाति के पौधे मुख्यतया संपूर्ण भारतवर्ष में तथा मध्य अफ्रीका से दक्षिण पूर्व एशिया तक एवं पृथ्वी भू–भाग के उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में विशेषतः पाए जाते हैं।

उष्णकटिबंधीय अथवा भूमध्य सागरीय क्षेत्र में यह पौधा बहु वर्षीय पौधे के रूप में भी पाया जाता है।

विश्व ग्लोब पटल पर तुलसी पौधे का सांकेतिक वितरण

भारतीय गुणात्मक विवरण के साथ ही, प्रारंभिक परिचय के तौर पर, भारतीय क्षेत्र में तुलसी पौध प्रजाति को अन्य विभिन्न नामों से भी जाना जाता है जो की निम्न प्रकार से हैं–

हिंदी – तुलसी

संस्कृत – अद्वितीया

धार्मिक – हरीप्रिया

औषधीय – सर्वसिद्धा

धार्मिक तथा औषधीय नाम परिचय के तारतम्य में कुछ प्रसंग ऐसे भी हैं जिनमे, तुलसी पौधे को देवी वृंदा के अवतरित स्वरूप के तौर पर स्वीकार्य किया जाता है, तथा धार्मिक प्रयोजनों में, विशेषकर हिंदू धर्म एवं वैष्णव धर्म में तुलसी को पवित्र पौधे के रूप में पूजते हैं।

जिसमें कि, तुलसी पौधे को देवी वृंदा जी के प्रतीक स्वरूप मानकर व्रत–पूजा एवं धार्मिक क्रिया–विधि आदि कार्य श्रद्धा पूर्वक किया जाता है।

औषधिय गुणों की बात करें तो, बृहद रोग उपचार के प्रयोजन में विशेष तात्विक गुणों से भरपूर होने के कारण, तुलसी प्राचीन काल से लेकर आज वर्तमान तक, विभिन्न रोग निदान हेतु उपयोग में लाई जाती है।

हालाँकि यह सर्वविदित है कि तुलसी एक औषधीय पौधा है जिसमें पोषण संबंधी गुण होते हैं, इसे अक्सर घर के आँगन, मंदिरों और बीमारियों के प्रमुख उपचार के रूप में देखा जाता है।

तुलसी का गहरा आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व भी है, जिसका भारतीय धार्मिक ग्रंथों और पुराणों में प्रमुखता से वर्णन किया गया है।

इस प्रकार प्रारंभिक परिचय के साथ–साथ आगे के खंड में अलग से तुलसी पौधे के धार्मिक आध्यात्मिक एवं औषधीय गुणों का वर्णन विस्तृत रूप में वर्णित है।

02.तुलसी पौध प्रजाति

पौध प्रजाति के दृष्टिकोण से तुलसी पौधा एक वार्षिक या यूं कहें कि अल्पकालिक बारहमासी झाड़ी है, जहां की पौधा प्रजातियों को हम वृक्ष, शाक, लता, झाड़ी इत्यादि, श्रेणियों में विभक्त करते हैं ।

अतः झाड़ी के रूप में तुलसी पौधे का सामान्य जीवन चक्र लगभग 1 वर्ष से 1–5 वर्ष तक का होता है एवं इसकी ऊंचाई 3 फीट तक हो सकती है।

तुलसी पौधे को घर के अंदर लगाना संभव है, जहां पर पर्याप्त धूप एवं हवा की उपलब्धता हो ।

घर आंगन में इसकी देखभाल करके इसे कुछ अधिक समय तक जीवित रखा जा सकता है, अर्थात, पौधे को लगातार काटकर–छांटकर, बीज बनने से रोक कर, और नई पत्तियों के विकास को प्रोत्साहित करके, 1 एवं 1–5 वर्ष से अधिक समय तक (कुछ उदाहरण में लगभग 8 वर्ष तक) जीवित रखा जा सकता है।

तुलसी पौधे का विकास चक्र निम्न प्रकार से है :–

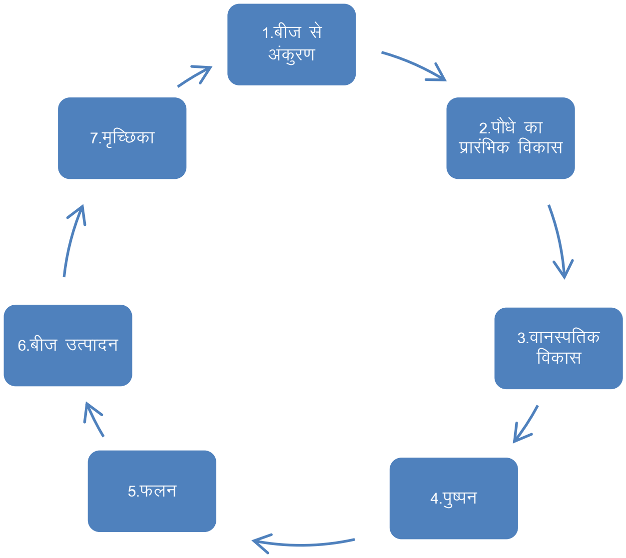

१. बीज से अंकुरण

२. पौधे का प्रारंभिक विकास

३. वानस्पतिक विकास

४. पुष्पन

५. फलन

६. बीज उत्पादन

७. मृच्छिका (पातन)

१. बीज से अंकुरण–

तुलसी के बीज उचित प्रकार से खेत में या गमले में बुवाई के पश्चात, अनुकूल परिस्थितियों में लगभग, 6 से 9 दिवस अंतराल से अंकुरित हो जाते हैं।

२. पौधे का प्रारंभिक विकास–

तुलसी पौधा अंकुरण के पश्चात पूर्ण विकसित पौधे की अवस्था प्राप्त करने में, दो से तीन सप्ताह तक की समयावधि लगाता है।

यह चरण पौधे का प्रारंभिक विकास कहलाता है।

३. वानस्पतिक विकास–

प्रारंभिक विकसित पौध अवस्था से परिपक्व एवं पूर्ण विकसित पौध अवस्था तक के समय अंतराल को, वानस्पतिक विकास चरण के रूप में जाना जाता है।

तुलसी पौधे का वानस्पतिक विकास चरण 4 से 6 सप्ताह तक का रहता है।

४. पुष्पन –

वानस्पतिक विकास अवधि में तुलसी में फूल खिलने लगते हैं और साथ–साथ बीज भी बनने लगते हैं।

५. फलन–

पुष्पन के पश्चात एवं बीज बनने से लेकर, बीज परिपक्व होने तक के समय अंतराल को, फलन समयावधि कहते हैं।

तुलसी पौधे के लिए यह समय लगभग 1 से 1–5 सप्ताह तक का होता है।

६. बीज उत्पादन–

फलन से प्राप्त परिपक्व बीज, पुनः से बीजारोपण हेतु एकत्र किए जा सकते हैं। सामान्यतः बीजांकुर के 5 से 7 सप्ताह पश्चात तुलसी के बीज परिपक्व हो जाते हैं।

७. मृच्छिका (पातन)–

मृच्छिका से तात्पर्य पौधे का जीवन चक्र समाप्त हो जाने से है, अथवा, पौधे के सूख जाने से है। अधिकतर सर्दियों के मौसम में या देखरेख ना होने की स्थिति में अथवा आयु चक्र के पूर्ण हो जाने पर, तुलसी का पौधा सूख जाता है।

स्पष्टीकरणः–
तुलसी की ज्ञात विभिन्न प्रजातियों में यद्यपि बीजांकुर एवं जीवन अनुक्रम समान ही होता है, किन्तु प्रजाति विशेष के अनुरूप पुष्पन–फलन का समय भिन्न–भिन्न होता है।

वानस्पतिक विवरण

तुलसी द्वी–बीज पत्री तथा शाकीय औषधीय पौधा है। तुलसी पौधे की पुष्पन अवस्था ज्यादातर जून माह के प्रारंभ से, प्रारंभिक वर्षा ऋतु तक हो सकती है।

वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से, पत्तियां चपटी होती हैं, आमतौर पर पौधे के तने से निकलने वाली हरी वृद्धि होती है जो प्रकाश संश्लेषण के लिए विशिष्ट होती है, तथा पौधे के लिए भोजन का उत्पादन करती है । प्रमुख घटकों में शामिल हैं लेमिना (ब्लेड), पोषक तत्वों के परिवहन के लिए शिराओं का एक नेटवर्क, एक डंठल जो पत्ती को तने से जोड़ता है, तथा एक सुरक्षात्मक मोमी क्यूटिकल। पत्तियां विभिन्न प्रकार की होती हैं, जैसे कि सरल (एकल पत्ती) या संयुक्त (एकाधिक पत्रक), और उनकी आकारिकी – जिसमें आकार, माप, मार्जिन और शिराविन्यास पैटर्न (एकबीजपत्री में समानांतर, द्विबीजपत्री में जालीदार) शामिल हैं – का उपयोग पौधे की पहचान के लिए किया जाता है।

तुलसी पौधा हेतु अनुकूल वातावरण ताप 65 से 86 डिग्री फॉरेनहाइट (18 से 30 डिग्री सेल्सियस) होता है । अतः गर्म वातावरण क्षेत्र में पुष्पन वर्ष भर पाया जा सकता है।

तुलसी के फूल, छोटे, सफेद गुलाबी, या बैगनी रंग के होते हैं, जो कि टर्मिनल स्पाइक्स में लगते हैं यानि की, पौधे के शीर्ष पर शाखाओं के छोर पर लगते हैं।

अर्थात जून (मानसून से पहले) से फूल खिलने लगते हैं और गर्म जलवायु में साल भर खिलते रह सकते हैं। फूल छोटे, सफेद, गुलाबी या बैंगनी रंग के होते हैं, जो हरे या बैंगनी रंग के बाह्यदलों वाले अंतिम कंटकों में उगते हैं। फलों में कई बीज होते हैं, जो फूलों के गुच्छों के गहरे भूरे रंग में बदल जाने पर पकते हैं।

तुलसी मंजरी

आकार में यह छोटे नलिकादार और ह्रदयाकार के होते है, तथा हरे या बैगनी रंग के बाह्य दल रहते हैं।

जैसा की तुलसी मुख्यतया वर्षा ऋतु मे उगता है, यह शीतकाल के अंतिम अवस्था से, ग्रीष्म के प्रारंभिक अवस्था में पुष्पन करता है।

तुलसी के पुष्प सुगंधित होते हैं एवं पुष्पन से लेकर, बीज परिपक्व होने तक, शाखाओं में बने रहते हैं, अर्थात प्राकृतिक और पर झड़ते नहीं है।

पुष्पन एवं पुष्पन विकास के दौरान से, तुलसी के पौधों में फलन अर्थात फल तैयार होना प्रारंभ होता है, जो की ग्रीष्म माह से, वर्षा प्रारंभ होने के पूर्व तक, विकसित एवं परिपक्व होते हैं।

तुलसी के बीज छोटे, नुकीले और, शाखाओं के शीर्ष भाग में स्थित फूलों द्वारा, विकसित फल के अंदर तैयार होते हैं। प्रत्येक फल में कई सारे बीज होते हैं।

जब तुलसी के पुष्प गुच्छ का रंग, हरे से गहरे भूरे रंग में परिवर्तित हो जाता है, तब बीज परिपक्व माने जाते हैं।

बीज परिपक्व होने के माह अंतराल पश्चात ही, तुलसी पौधा सुखने लग जाता है।

जहाँ गर्मियाँ बहुत तेज होती हैं, उचित पानी देने से इसकी उम्र बढ़ जाती है।

आधुनिक जानकारी के साथ, विभिन्न मिट्टी के अनुकूल होने की तुलसी की क्षमता इसे रीवा के दोमट भूभाग के लिए आदर्श बनाती है, जहाँ यह घरेलू बगीचों में पनपती है।

तुलसी से संबंधित उपरोक्त संकलन तुलसी के पौधा प्रकार को सामान्य परिचय को सार संक्षेप में प्रस्तुत करता है।

03.तुलसी पौधा प्रकार

तुलसी पौधा प्रकार के अंतर्गत, तुलसी के ऐसे पौधे सम्मिलित हैं, जो कि, मूल गुण में समान होते हैं किंतु अन्य गुणों में, जैसे कि आकार–प्रकार आदि में, थोड़ी सी भिन्नता प्रकट करते हैं।

यद्यपि, एक ही पादप कुल लैमिआसी के होते हुए भी, विभिन्न प्रकार में यह तुलसी पौधे, स्थान विशेष के अनुरूप पाए जाते हैं।

तुलसी पौधे के इन विभिन्न प्रकारों में से कुछ महत्वपूर्ण प्रकार निम्न है –

१. रामा तुलसी.

२. विमला तुलसी.

३. श्यामा तुलसी.

४. मरुआ तुलसी.

५. लौंग तुलसी.

६. होअरी तुलसी.

७. विक्स तुलसी.

८. लेमन तुलसी.

९. कपूर तुलसी.

१०. श्वेत तुलसी.

तुलसी की ज्ञात विभिन्न समस्त प्रजातियों में से उपरोक्त वर्णित दस प्रजातियां मुख्य तौर पर लगभग संपूर्ण तुलसी पौध प्रकारों का प्रतिनिधित्व करती हैं।अतः अन्य विभिन्न तुलसी पौध प्रकारों जैसे कि पर्शियन क्रिसमस इटालियन बाक्सवूड बेसिल इत्यादि का परिचय एवं विस्तार प्रस्तुत पुस्तक में नहीं किया जा रहा है।

तुलसी तालिका

क,	तुलसी प्रजाति	वैज्ञानिक नाम	अन्य सामान्य नाम	मूल स्थानिक प्रजाति
01	रामा तुलसी	ओसिमम टेनुइफ्लोरम	श्री तुलसी	उत्तरी एवं मध्य भारत
02	विमला तुलसी	स्टीविया रिबेयुडिआना	मीठी तुलसी	पुरूग्वे,ब्राजील
03	श्यामा तुलसी	ओसिमम सैंक्टम	कृष्ण तुलसी	दक्षिणी एवं मध्य भारत
04	मरुआ तुलसी	ओसिमम लैबिएटी	वन तुलसी	एशिया,अफ्रीका,अमेरिका
05	लौंग तुलसी	ओसिमम ग्रेटिसियम	अफ्रीकन तुलसी	अफ्रीका,मेडागास्कर
06	होअरी तुलसी	ओसिमम अमेरिकेनम	टमेरिकन तुलसी	भारतीय उपमहाद्वीप,अफ्रीका
07	विक्स तुलसी	प्लेक्टेंथस एम्बोनिका	मिंट तुलसी	तमिलनाडु–भारत
08	लेमन तुलसी	ओसिमम अफ्रिकेनम	थाइ लेमन तुलसी	अफ्रीका,एशिया
09	कपूर तुलसी	ओसिमम किलिमैंडशारिकम	कर्पूरा तुलसी	ईस्ट अफ्रीका
10	श्वेत तुलसी	ओसिमम लैमिआसी	उज्जवल तुलसी	पूर्वी एवं मध्य भारत

उपरोक्त से यह स्पष्ट है कि तुलसी के प्रकारों में समान मूल गुणों वाली किस्में शामिल हैं, लेकिन आकार, साइज आदि में मामूली अंतर होता है। हालांकि ये लेमियासी परिवार से हैं, लेकिन ये क्षेत्र के अनुसार भिन्न होते हैं।

१. रामा तुलसी

तुलसी के दो के विशिष्ट प्रकारों, रामा और श्यामा में से, रामा तुलसी प्रमुख है। रामा तुलसी को हरे पत्तों वाली तुलसी कहते हैं, जो कि धार्मिक और औषधीय दोनों ही गुणों से महत्वपूर्ण है।

घरों में अधिकतर रामा तुलसी ही लगाई जाती है। इसको शुभ और भाग्यशाली माना जाता है, और इसे घर में लगाने से सकारात्मक ऊर्जा आती है।

रामा तुलसी का पौधा

रामा तुलसी की पहचान इस प्रकार की जा सकती है कि, इसके पत्ते अन्य तुलसी पौध प्रकारों में, सबसे ज्यादा उज्जवल प्रतीत होते हैं, एवं, इसकी मंजरी अर्थात फूल हल्के हरे एवं कम गहरे बैगनी रंग के दिखते हैं।

रामा तुलसी औषधीय महत्व भी रखती है। इसमें एंटी बैक्टीरियल, एंटी वायरल और एंटी फंगल गुण होते हैं, जो कि प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करते हैं और बीमारियों से लड़ने में मदद करते हैं।

साथ ही, रामा तुलसी के औषधीय गुणों में यह भी है कि, इसके तत्व पाचन को ठीक करते हैं, और ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। यह आंखों की रोशनी बढ़ाने में भी उपयोगी है।

यहां एक खास बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि, रामा तुलसी के कुछ गुण ऐसे पाए जाते हैं जो कि पाचन तंत्र के लिए हानिकारक हो सकते हैं, खासकर गर्मियों के मौसम में

रामा तुलसी को प्रायः श्री तुलसी, उज्जवल तुलसी आदि उपनामों से भी जाना जाता है, एवं आयुर्वेदिक दिव्य गुणों के साथ–साथ श्री भोग में भी, अवश्य ही, रामा तुलसी दल को प्रयुक्त किया जाता है।

२. विमला तुलसी

विमला तुलसी, तुलसी के एक विशिष्ट प्रकार को संदर्भित करता है, और इसे स्टीविया के नाम से भी जाना जाता है।

विमला तुलसी, अपनी मीठी पत्तियों के लिए जानी जाती है और मीठे (स्वीटनर) के रूप में इस्तेमाल की जाती है।

मधुमेह रोगियों के आहार में प्राकृतिक मिठास के लिए इसका उपयोग किया जाता है।

विमला तुलसी की पत्तियां आम तौर पर, रामा तुलसी की तुलना में थोड़ी छोटी और चौड़ी होती है।

विमला तुलसी इसके पत्तों में हाइपोग्लाइसेनिक गुण होते हैं, जो रक्त शर्करा के स्तर को कम करने में मदद करते हैं।

वास्तव में, तुलसी और स्टीविया अलग हैं, लेकिन पौधों के मानदंडों में समानता और तुलसी के रूप में व्यापक उपयोग के कारण, स्टीविया को भी तुलसी कहा जाता है। स्टीविया और तुलसी एक समान नहीं हैंय जबकि स्टीविया को कभी–कभी उसकी मिठास के कारण मधु तुलसी या मीठी तुलसी कहा जाता है, यह एक अलग पौधा (स्टीविया रेबाउडियाना) है जो शून्य–कैलोरी स्वीटनर के रूप में उपयोग किया जाता है। असली तुलसी (ओसिमम टेनीफ्लोरम) एक अलग जड़ी–बूटी है, जिसे पवित्र तुलसी के रूप में भी जाना जाता है, जिसका मुख्य रूप से आयुर्वेद में इसके औषधीय और धार्मिक गुणों के लिए उपयोग किया जाता है।

स्टीविया

यह क्या हैः स्टीविया रेबाउडियाना पौधे से एक बारहमासी जड़ी–बूटी झाड़ी।

उपयोगः इसके पत्तों में ऐसे यौगिक होते हैं जो चीनी से सैकड़ों गुना अधिक मीठे होते हैं और इसे पेय और खाद्य पदार्थों में शून्य–कैलोरी, प्राकृतिक स्वीटनर के रूप में उपयोग किया जाता है।

सामान्य नामः कुछ क्षेत्रों में, इसे मीठी तुलसी, मधु तुलसी, शुगर तुलसी, या कैंडीलीफ कहा जाता है क्योंकि इसकी मिठास के कारण।

तुलसी(पवित्र तुलसी)

यह क्या हैः एक अलग पौधा, जिसे वैज्ञानिक रूप से ओसिमम टेनीफ्लोरम के रूप में जाना जाता है।

उपयोगः यह हिंदू धर्म में एक पवित्र जड़ी–बूटी है, जिसका उपयोग आयुर्वेदिक चिकित्सा में इसके सूजन–रोधी और एंटीऑक्सीडेंट गुणों के लिए और पारंपरिक प्रथाओं में किया जाता है।

स्वादः इसे हल्के पुदीने और ताजगी भरे स्वाद के लिए जाना जाता है, न कि स्टीविया की तरह मिठास के लिए।

मुख्य अंतर

भ्रम इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि ''तुलसी'' शब्द कभी–कभी मीठे स्वाद वाली स्टीविया पौधे के लिए एक स्थानीय नाम के रूप में उपयोग किया जाता है, विशेष रूप से भारत में, लेकिन ये दो पूरी तरह से अलग जड़ी–बूटियाँ हैं।

विमला तुलसी के पौधे को रोगनिरोधक और स्वास्थ्य लाभकारक माना जाता है। इसकी पत्तियों की चाय का सेवन, विषम अस्थमा, जुकाम, कफ, गले की खराश, और पाचन संबंधी समस्याओं को दूर करने में सहायक है।

साथ ही, विमला तुलसी के अन्य नाम हैं– स्टीविया, यह इसका वैज्ञानिक नाम है। कैंडलीफ, यानी पत्तियों का रूप। स्वीट–लीफ, इसकी मीठी पत्तियां के कारण एवं शुगर लीफ, मधुमेह रोग में भी सेवनयोग होने के कारण।

३. श्यामा तुलसी

श्यामा तुलसी, तुलसी के मुख्य पौध प्रजातियों में से एक है, जो कि, प्रायः घरों में लगाई जाती है, एवं श्यामा तुलसी की भी पूजा की जाती है।

श्यामा'तुलसी

श्यामा तुलसी के पत्तों का रंग गहरा हरा या बैगनी रंग का होता है, जिस कारण से इसे काली तुलसी भी कहा जाता है।

श्यामा तुलसी, तुलसी के अन्य प्रकारों में से विशेष एक ऐसी तुलसी है जो कि, भगवान श्री कृष्ण जी को अति प्रिय है, अतः इसे कृष्ण तुलसी भी कहा जाता है।

कृष्ण जी की जन्मस्थली मथुरा वृंदावन में तुलसी पौधे को विशेषतः समर्पित एक वन स्थापित किया गया है। जो की, निधिवन के नाम से जाना जाता है।

श्यामा तुलसी की पत्तियों का स्वाद, रामा तुलसी की तुलना में थोड़ा कड़वा होता है, जब कि रामा तुलसी का स्वाद हल्का मीठा होता है, एवं आकार में लगभग समान ही होते हैं।

श्यामा तुलसी औषधीय उपयोग के लिए भी जानी जाती हैं, विशेषकर प्रतिरक्षा बढ़ाने और तनाव कम करने में श्यामा तुलसी फायदेमंद है। इसके पत्तों का रस सेवन करने से और नियमित उपयोग से त्वचा से जुड़ी समस्या का निदान होता है।

इसकी पत्तियों का सेवन खांसी, जुकाम, इम्यूनिटी बढ़ाने में, और कैंसर से बचाव में उपयोगी होने के साथ–साथ, हृदय स्वास्थ्य में भी सुधार लाने मे सहयोगी है।

श्यामा तुलसी में कुछ ऐसे भी गुण पाए जाते हैं जो कि बिगड़े सेहत में सुधार लाते हैं और शरीर में गर्माहट पैदा करते हैं। अतः यह प्रारंभिक बुखार आदि के लिए उपयोग की जाती है।

४. मरुआ तुलसी

मरुआ तुलसी और तुलसी, दोनों ही लैमिआसी परिवार के पौधे हैं एवं कई समान गुण रखते हैं। लेकिन मरुआ की पत्ती, तुलसी के पत्तों से थोड़ी बड़ी और नुकीली होती है।

सुगंध में, मरुआ में भी तुलसी की तरह ही सुगंध होती है किंतु मरुआ की पत्तियां, तुलसी के पत्तियों से थोड़ा कड़वा स्वाद रखती हैं। मरुआ को वन तुलसी एवं ममरी भी कहा जाता है।

मरुआ के पत्तों की सुगंध एवं इसके औषधीय गुण इसे उपयोगी बनाते हैं। इसकी पत्तियों में पोटेशियम कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, प्रोटीन, विटामिन सी, कैल्शियम, आयरन आदि, जैसे पोषक तत्व होते हैं।

मरुआ(वन)तुलसी का पौधा

मरुआ तुलसी में विटामिन बी–6 और मैग्नीशियम होने के कारण से यह, तंत्रिका, हृदय, पुरानी खांसी और सर्दी के लिए, एक टॉनिक के जैसे लाभकारी है।

मरुआ तुलसी की तासीर गर्म होती है, और यह तिक्त, गर्म, एवं रक्त शोधक माना जाता है। इन्हीं गुणों के कारण से मरुआ तुलसी को रूक्ष, तीक्ष्ण, हल्का, तिक्ता, चरपरा, उष्ण, कफ–वात शामक, कुष्ठघ्न, विषघ्न, वेदना स्थापन, दुर्गंध नाशक, रुचिकारक, दीपन आर्तवजनन, हृदय उत्तेजक, ज्वरघ्न, कटु, पौष्टिक, तथा पित्तिवर्धक कहा गया है।

मरुआ तुलसी के कुछ लाभ निम्न प्रकार हैंः–

पेट की समस्या में राहत

मरुआ तुलसी के पत्तों की चटनी या रस, पेट के कीड़ों को निकालने और पेट के संक्रमण को ठीक करने में मदद करता है।

सर्दी जुकाम और खांसी में आराम

इसकी पत्तियां को चाय में डालकर पीने से, सर्दी–जुकाम और खांसी में, आराम मिलता है।

सिरदर्द और माइग्रेन में राहत

मरुआ की पत्तियों के रस का लेप लगाने से, सिरदर्द और माइग्रेन में राहत होती है।

मुंह की समस्याओं का निदान

इसकी पत्तियों को गरमा–गरम पानी में डालकर या उबालकर, उसी पानी से कुल्ला या गरारा करने पर, मसूड़ों की सुजन को ठीक करने के साथ ही, मुंह की दुर्गंध को दूर किया जा सकता है।

मच्छरों को दूर भगता है

मरुआ तुलसी पौधे के पत्तों की सुगंध से मच्छर दूर भागते हैं।

सर्प को दूर भगता है

इसके पत्तों की गंध, सर्प को, पौधे से दूर रखने का काम करती है।

शरीर की विषाक्तता मिटाता है

मरुआ तुलसी के अर्क का सेवन, शरीर की अवांछनीय विषाक्तता ' टॉक्सिफिकेशन ' को दूर करने या मिटाने यानि की ' डिटॉक्सिफाई ' करने के काम में उपयोगी है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि, मरुआ तुलसी (वन तुलसी) पौधे का उपयोग, स्वास्थ्य के विभिन्न आयामों में किया जाता है।

वन तुलसी के स्वास्थ्य लाभ हेतु उपयोग का उचित प्रकार निम्न है:—

अ. चटनी

ताजी पत्तियों को वृक्ष से तोड़कर, इकट्ठा करने के उपरांत अच्छी तरह से धोकर एवं साफ कर के पीसकर, तुलसी के पत्तियों की चटनी बनाई जाती है।

इसकी चटनी का उपयोग पेट से संबंधित समस्याओं के लिए लाभकारी होता है।

तुलसी के पत्तियों की चटनी

ब. रस

तुलसी पत्तियों का रस

पर्याप्त मात्रा में इकट्ठा की गई पत्तियों को पीसकर व निचोड़ कर प्राप्त किए गए रस का सेवन किया जाता है।

यह पेट से कीड़े निकालने में कारगर होता है, एवं लेप करने पर सिरदर्द या माइग्रेन आदि में उपयोगी औषधि है।

स. चाय

चाय की पत्तियों के साथ ही तुलसी भी जैसे कि अदरक आदि का उपयोग किया जाता है।

तुलसी की पत्तियों के चाय का सेवन, सर्दी–जुकाम, खांसी आदि से, आराम देता है।

द. लेप

बारीक पिसी हुई पत्तियों अथवा सूखी पत्तियों से बनाए गए पाउडर आदि का उपयोग त्वचा पर लेप की तरह किया जाता है।

लेप मुख्यतया, सिरदर्द या माइग्रेन को दूर करने में एवं, मच्छर–कीट आदि को दूर रखने में, उपयोगी है।

इ. अर्क

तुलसी की पत्ती अथवा अन्य भाग जैसे कि तना, जड़ इत्यादि को, अच्छी तरह से पानी में डालकर उबाला जाता है एवं ठंडा होने पर छान कर तुलसी अर्क का सेवन किया जाता है।

तुलसी अर्क का प्रमुख उपयोगिता यह है कि, यह अर्क शरीर की विषाक्तता मिटाने अथवा कम करने में सक्षम औषधि है।

मध्य प्रदेश क्षेत्र अंतर्गत मरूआ तुलसी (वन तुलसी) बहुतायत में पायी जाती है, ग्रामीण क्षेत्रों में इसका उपयोग पशुओं के स्वास्थ्य के लिए भी किया जाता है।

५. लौंग तुलसी

लौंग तुलसी को क्लोव तुलसी, लौंग बेसिल, सौंफ तुलसी, इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।

यह एक तरह के तुलसी का पौधा है, जिसकी पत्तियों में लौंग का स्वाद और खुशबू होती है।

लौंग तुलसी

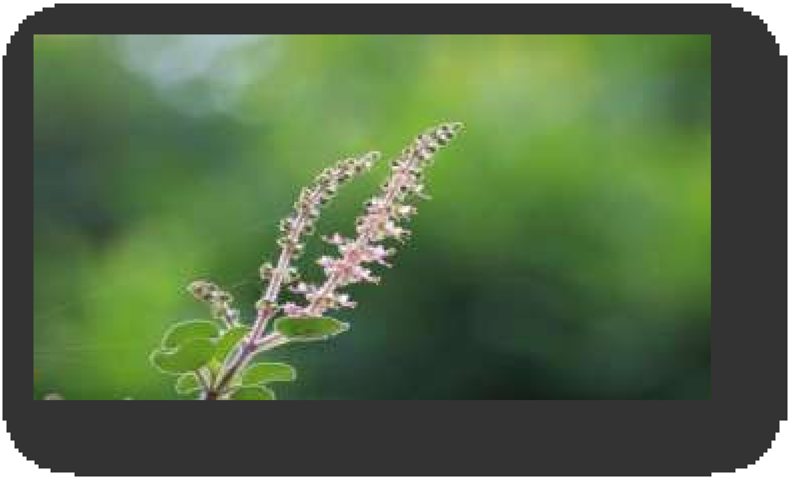

यह पौधा मुख्य रूप से भारत में उगाया जाता है। इसकी पत्तियों का उपयोग चाय बनाने, मसाले के रुप में और औषधीय उद्देश्यों के लिये किया जाता है।

लौंग

तुलसी के उपयोग एवं फायदे निम्न प्रकार से हैं–

रोग प्रतिरोधक क्षमता

लौंग और तुलसी दोनों में ही एंटी आक्सीडेंट और एंटी बैक्टेरियल गुण पाए जाते हैं, जो कि, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं।

सर्दी–खांसी

क्लोव बेसिल की चाय पीने से, सर्दी–खांसी और गले की खराश में, राहत मिलती है।

पाचन

तुलसी एवं लौंग दोनों ही पाचन तंत्र में सुधार करने में मदद करते हैं, एवं, चूंकि लौंग तुलसी पौधा दोनों का ही हाइब्रिड रुप है, अतः इसका उपयोग पाचन के विचारों को दूर करने में लाभकारी है।

तनाव

लौंग में भी और तुलसी में भी, तनाव को कम करने के गुण पाए जाते हैं। अतः लौंग तुलसी पौधे का उपयोग, तनाव को कम करने के लिए किया जाता है।

बुखार

लौंगतुलसी पौधे के अर्क का सेवन करने से बुखार में भी राहत मिलती है।

६. होअरी तुलसी

होअरी तुलसी मुख्यतया ओसिमम अमेरिकेनम नाम से पहचानी जाती है।

यह तुलसी प्रजाति का एक औषधीय पौधा है जो कि लैमिआसी परिवार से संबंधित है और इसे अमेरिकन तुलसी तथा लाइम तुलसी के नाम से भी जाना जाता है।

औषधीय उपयोगिता के दृष्टिकोण से
य ।भिन्न बिमारियों के इलाज में उपयोग
व वात, पित्त, कफ, नेत्र रोग, वमन, मूर्छा
, लेयस), प्रदाह (जलन), और पथरी
रे

इसे पेट के फूलने को दूर करने वाला एवं उत्तेजक, शांति दायक, और मूत्र निस्सारक भी माना जाता है।

होअरी तुलसी

होअरी तुलसी की रासायनिक संरचना में थायमोल, यूजेनाल, और अन्य उड़नशील तेल होते हैं।

तुलसी पौधा की यह प्रजाति बंगाल, नेपाल, आसाम की पहाड़ियाँ, पूर्वी नेपाल, और सिंध में, पायी जाती है।

७. विक्स तुलसी

यह मिंट, विक्स या बाम की तरह खुशबू देने वाला, तुलसी प्रजाति का एक पौधा है, एवं ज्यादातर, विक्स तुलसी के नाम से जाना जाता है।

यह सर्दी–खांसी, गले की खराश के लिए लाभदायक है।

अन्य नामों में इसे मेंथा अर्वेन्सिस भी कहते हैं।

विक्स तुलसी में सुजन रोधी एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि के गुण पाए जाते हैं। इसके अर्क का सेवन तनाव चिंता आदि में कमी लाने में सहायक हैं

विक्स तुलसी का पौधा

विक्स तुलसी में जीवाणुरोधी और एंटीवायरल गुण पाए जाते हैं। इसीलिए यह, सर्दी–खांसी एवं, श्वसन संबंधित समस्याओं के उपचार में प्रभावी है।

८. लेमन तुलसी

लेमन तुलसी को हिंदी में नींबू तुलसी एवं अन्य नामों में इसे, लेमन बेसिल, थाईलेमन बेसिल, तथा लाओ बेसिल भी कहते हैं।

यह तुलसी की दो विभिन्न प्रजातियों, एक पवित्र तुलसी एवं दूसरी अमेरिकन बेसिल को आपस में मिलाकर, बनाई गयी संकर तुलसी प्रजाति है।

तुलसी के इस पौध प्रजाति में नींबू की तरह खुशबू आती है एवं, नींबू तथा तुलसी दोनों के ही सम्मिलित रूप से औषधीय गुण पाए जाते हैं।

यह पौधा मुख्य रूप से उत्तर–पूर्व अफ्रीका एवं दक्षिणी एशिया के क्षेत्रों में उगता है एवं, अरब, इंडोनेशिया, फिलीपीन, लाओ, मलय, भारत, पर्शिया, थाईलैंड, आदि जगहों पर भी पाया जाता है तथा उपयोग में लाया जाता है।

इसे इंडोनेशियाई व्यंजनों में ' केमांगी ' के नाम से जाना जाता है।

इसका प्रयोग सलाद, करी, सूप, और स्टीम्ड व्यंजनों में, भी किया जाता है। यह, व्यंजनों को स्वादिष्ट बनाने के साथ–साथ, पौष्टिकता में भी वृद्धि करता है। लेमन तुलसी का सेवन हर प्रकार से स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

६. कपूर तुलसी

कपूर तुलसी को अंग्रेजी में ब्लू बेसिल या होली ब्लू बेसिल कहते हैं।कपूर तुलसी एक प्रकार की तुलसी पौध प्रजाति है जो कि, अपनी विशिष्ट कपूर जैसी खुशबू के लिए जानी जाती है।

साथ ही, यह पौधा औषधीय एवं धार्मिक गुणों के लिए भी प्रसिद्ध है।

यह लॉबी रेशमिश में बैगनी तथा गुलाबी फूलों के, घने गुच्छे देता है।

कपूर तुलसी का पौधा

कपूर तुलसी पौधा सीधा एवं बहु शाखाओं वाला झाड़ी है। यह 30 से 60 सेन्टीमीटर तक लंबा होता है। इसमें छोटे, तेज, खुशबूदार, एवं दांतेदार, पत्ते होते हैं।

समशीतोष्ण क्षेत्र जैसे की, भारतीय उप महाद्वीप एवं उत्तरी गोलार्ध में स्थित उत्तरी भाग में, कपूर तुलसी को वार्षिक रूप से उगाया जाता है।

कपूर तुलसी के कई चिकित्सकीय लाभ भी होते हैं और इसका उपयोग गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है।

इसके अलावा कपूर तुलसी की सुगंध कीड़े मच्छरों को दूर भगाती है।

कपूर तुलसी, ऊंचाई में सबसे छोटी होती है एवं, तुलसी के सभी पौधों की किस्म में, सबसे अधिक खिलती है।

कपूर तुलसी की तासीर गर्म है। इसके पत्ते भोजन में स्वाद के लिए, चाय के लिए, और औषधीय उद्देश्यों लिए, उपयोग किए जाते हैं।

यह प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में, सूजन को कम करने में, और मानसिक शांति प्रदान करने में, मदद करती है।

साथ ही यह, त्वचा संबंधित समस्याओं जैसे कि, पिंपल्स, एग्जिमा, आदि में भी निदान हेतु, प्रायः उपयोग में लाई जाती है।

१०. श्वेत तुलसी

श्वेत तुलसी को विष्णु तुलसी के नाम से भी जाना जाता है।

यह भी तुलसी परिवार का एक उत्कृष्ट पौधा है, जो कि, एक वार्षिक होता है।

श्वेत तुलसी की पहचान एवं विशेषता यह है कि, इसमें आने वाले फूलों का रंग सफेद होता है एवं पत्तियां भी हल्के सफेद रंग की दिखती हैं।

श्वेत तुलसी में भी लगभग तुलसी के समस्त आयुर्वेदिक गुण पाए जाते हैं, और यह विशेषतः , भगवान विष्णु जी की पूजा में, प्रयुक्त की जाती है।

इस प्रकार उपरोक्त उल्लिखित पवित्र तुलसी पौध प्रजाति के प्रकारों, नाम तथा गुणों आदि से, यह स्पष्ट है कि, तुलसी पौधा अपने धार्मिक प्रयोजन की उपयोगिता आदि के साथ ही, मानवीय संस्कृति की प्रारंभिक कालखंड से लेकर निरंतर आज तक, अपने दिव्य गुणों के साथ सतत है।

तुलसी, अपने विभिन्न प्रजातियों और प्रजातियों के वितरण के माध्यम से, लगभग संपूर्ण पृथ्वी के भूखंड में, अपनी उपस्थिति, नियमित किए हुए है। और इसी प्रकार से यह, मानव धर्म और स्वास्थ्य कल्याण कार्य में, यदि हम सभी के द्वारा समुचित प्रयत्न किए जाते रहे तो, आगामी चिर काल तक, सदैव ही, एक मातृ गुणों वाली पौध प्रजाति के रूप में, हमारी भावी संतति एवं परात्पर के हेतु वरदानिक पौध प्रजाति, बनी ही रहेगी।

इस प्रकार, तुलसी के प्रकार, नाम और गुण इसकी धार्मिक और औषधीय उपयोगिता को उजागर करते हैं। उचित संरक्षण प्रयासों से पर्यावरणीय परिवर्तनों के बीच आने वाली पीढ़ियों के लिए इसके लाभ सुनिश्चित होंगे।

आज वर्तमान एवं भविष्य के समय कालखंड में होने वाले संभावित वैश्विक पर्यावरणीय एवं जलवायविक परिवर्तन और प्राकृतिक आपदा के प्रति हमारी तैयारी, इस पवित्र तुलसी पौध प्रजाति संरक्षण–संवर्धन आदि के लिए परिपूर्ण हो, जिससे, भविष्य काल में भी मानव समाज एवं संस्कृति, तुलसी के पवित्र आशीर्वाद स्वरूप इसके दिव्य गुण, धर्म एवं स्वास्थ्य के परिप्रेक्ष्य में, सदुपयोगी बने रहें।

04.तुलसी आध्यात्मिक वृक्ष

तुलसी पौधे का विभिन्न प्रजातियां के माध्यम से वितरण यूं तो संपूर्ण पृथ्वी भूखंड पर विस्तृत है, जैसा कि पूर्व संदर्भ में उल्लेख किया गया है। साथ ही यह पौधा भारतीय उपमहाद्वीप के लगभग संपूर्ण क्षेत्र में पाया जाता है।

भारतीय संस्कृति की यदि बात करें तो तुलसी प्रारंभिक कालखंड से ही एवं आज वर्तमान तक भी, भारतीयत आध्यात्मिकता की पर्याय बनी हुई है।

इसी तारतम्य में यदि हम तुलसी पौध प्रजाति के बारे में, अब तक के समस्त मान्य तथ्यों की बात करें तो, यही निष्कर्ष है कि तुलसी पौधा दिव्य, वरदानिक, एवं पवित्र पौधे के रूप में, आदि सनातन संस्कृति से निरंतर आज वर्तमान तक, आध्यात्मिक वृक्ष के रूप में स्वीकृत है।

पुरातन भारतीय वेदांग, वेद, पुराण, उपनिषद, शास्त्र, इत्यादि सभी में, यथा अंश के रूप में, तुलसी पौधे का परिचय प्राप्त है एवं, संबंधित व्याख्या की गई है।

यद्यपि ऋग्वेद में तुलसी पौधे का प्रत्यक्ष वर्णन अस्पष्ट है किंतु तुलसी पौधे के प्रति अद्वितीया संज्ञा का प्रत्यक्ष वर्णन ऋग्वेद में भी किया गया है।

अग्र लिखित, श्री मद्भगवद्गीता के अध्याय–10, श्लोक संख्या– 21 से 39 तक के, कुछ अंश प्रस्तुत हैं:–

आदित्यानामहं, विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान,

मरीचिर्मरुतास्मि, नक्षत्राणामहं शशि ।।

वेदानां सामवेदोऽस्मि, देवानामस्मि वासवः,

इन्द्रियांणां मनचश्चास्मि, भूतनामस्मि चेतना।।

रुद्राणां शंकरश्चास्मि, वित्तेशो यक्षरक्षसाम,

वसूनां पावकश्चास्मि, मेरूः शिखरिणामहम्।।

अनन्तश्चास्मि नामानां, वरुणों यादसामहम्,

पितृणामर्थमाचास्मि, यमः संयमतामहम्।।

पवनः पवतामस्मि, रामः शस्त्रभृतामहम्,

झषाणां मकरश्चास्मि, स्त्रोतसामस्मि जाह्नवी।।

भगवान श्री कृष्ण जी द्वारा उपरोक्त प्रस्तुत उद्धरण में जिस प्रकार व्याख्या दी गई है किः—

हे अर्जुन तू मुझे इस प्रकार जान किः—

—समस्त ज्योतिर्वान चीजों में अर्थात चंद्रमा, नक्षत्र, तारा इत्यादि में, मैं सूर्य हूं ।

—जल में रहने वाले जीवों में, मैं उनका राजा वरुण, अर्थात जल हूं ।

—विभिन्न पर्वतों में, मैं पर्वतों का श्रेष्ठ, मेरू पर्वत हूं ।

—समस्त वृक्ष प्रजातियों में, मैं वासुदेव पीपल का वृक्ष हूं।

श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 10, श्लोक 21—39) में, भगवान कृष्ण स्वयं को विभिन्न श्रेणियों में सर्वश्रेष्ठ बताते हैं, जिनमें वृक्षों में वासुदेव पीपल भी शामिल है, जो तुलसी की आध्यात्मिक समतुल्यता का संकेत देता है।

मध्य प्रदेश की लोककथाओं में, तुलसी को कृष्ण की लीलाओं से जोड़ा जाता है।

तद्नरूप पौराणिक प्रसंगों, दंतकथाओं, एवं मान्यताओं के अनुसार, जन—सामान्य यह विदित है कि, तुलसी पौधा की व्युत्पत्ति, देवी वृंदा के अस्तित्व से की गई है ।

देवी वृंदा से संबंधित प्रसंग ब्रह्म वैवर्त पुराण, शिव पुराण, देवी भागवत पुराण,पद्म पुराण, तथा भागवत पुराण आदि में वर्णित है।

देवी वृंदा का तुलसी पौधे के रूप में अवतरण

ब्रह्म वैवर्त पुराण एवं देवी भागवत पुराण में वृहद, तथा शिव पुराण एवं विष्णु पुराण आदि में अंशात्मक, देवी वृंदा का तुलसी पौधा रूप में अवतरण की कथा वर्णित है।

तुलसी के आध्यात्मिक महत्व का प्रमाण श्री राम चरित मानस के एक प्रसंग में भी है–

श्री राम चरित मानस के सुंदरकांड खंड अंतर्गत, दोहा 5 से दोहा 6 तकः–

भवन एक पुनि दीख सुहावना।

हरि मंदिर तहॅं भिन्न बनावा।।

रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ

नव तुलसिका वृंद तॅह देखि हरष कपिराइ ।। दोहा – 5।।

लंका निसिचर ,निकर निवासा।

इहां कहां सज्जन, करि वासा।1।

मन महुं तरक, करै कपि लागा।

तेहीं समय, विभीषण जागा।2।

राम राम तेंहिं, सुमिरन कीन्हा।

हृदय हरषि कपि, सज्जन चीन्हा।3।

एहि सन हठि, करिहऊँ पहिचानी।

साधु ते होई न, कारज हानि।4।

बिप्र रूप धरि, बचन सुहाए।

सुनत विभीषन, उठि तहँ आए।5।

करि प्रनाम पूंछी कुसलाई।

बिप्र कहहु निज कथा बुझाई।6।

की तुम्ह हरि, दासन्ह महँ कोई।

मोरे ह्रदय प्रीति अति होई।।

की तुम्ह राम दीन अनुरागी।

आयहु मोहि करन बहु भागी।।

तब हनुमन्त कही सब राम कथा निज नाम।

सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमिरि गुन ग्राम ।।।।

उपरोक्त प्रस्तुत प्रसंग अनुसार श्री हनुमान जी सीता जी की खोज करते हुए समुद्र लांघकर लंका में प्रवेश करने के पश्चात जब लंका का अवलोकन करते हैं तब एक गृह स्थान पर दृष्टि पड़ते ही कदाचित विस्मय अनुभव करते हुए ठहर जाते हैं

यहां पर व्याख्या है कि श्री विभीषण जी के गृह निवास स्थान पर श्री हनुमान जी ब्राह्मण वेश धारण करके श्री हरि नाम उच्चारण करते हुए द्वार पर दस्तक देते हैं समक्ष होने पर अपना स्वयं का परिचय श्री हरि सेवक बताते हैं तथा विभीषण जी का भी परिचय प्राप्त करते हैं

इसी वार्तालाप में विषय है कि, श्री हनुमान जी द्वारा यह स्वीकार्य किया जाता है कि, द्वार पर श्री चिन्ह– स्वास्तिक(ओम) एवं, श्री तुलसी का पौधा देखकर, जिज्ञासा वश

कि ''अवश्य ही यह हरि सेवक का निवास स्थान होगा'' विभीषण जी से मिलने जाते हैं।

अतः रामायण कल कि यह घटना, इस बात पर प्रकाश डालती है की, तुलसी पौधा, आध्यात्मिक विषय वस्तु के रूप में सदैव सनातन से ही, भारतीय संस्कृत में अभिन्न अंग के रूप में, प्रयुक्त रही है, एवं, पुरातन के साथ साथ आज वर्तमान में भी, तुलसी पौधे का आध्यात्मिक प्रयोजन निरंतर है।

देवी भागवत पुराण में वृंदा को भगवान विष्णु की पत्नी और तुलसी पौधे के रूप में वर्णित किया गया है। समुद्र मंथन के दौरान जब लक्ष्मी (विष्णु की पत्नी) समुद्र से प्रकट हुईं तो वृंदा भी उसी समय प्रकट हुईं, लेकिन वह, लक्ष्मी से अलग थीं।

विस्तार में विवरण निम्न प्रकार से है –

समुद्र मंथन

यह घटना देवताओं और असुरों (दानवों) द्वारा अमृत (अमरता का रस) प्राप्त करने के लिए समुद्र को मथने की है।

लक्ष्मी का प्राकट्य

समुद्र मंथन के दौरान देवी लक्ष्मी (भगवान विष्णु की पत्नी) समुद्र से प्रकट हुईं।

वृंदा का प्राकट्य

देवी भागवत पुराण के अनुसार, वृंदा भी, देवी लक्ष्मी के साथ ही समुद्र से प्रकट होती हैं, लेकिन वह लक्ष्मी से अलग थीं।

तुलसी का रूप

वृंदा को बाद में तुलसी के रूप में जाना जाने लगा और उन्हें पवित्र माना जाता है।

पौराणिक कथा

देवी भागवत पुराण में वृंदा की कथा लक्ष्मी जी से अलग बताई गई है, जबकि, कुछ अन्य पुराणों में वृंदा को लक्ष्मी का ही एक रूप माना गया है।

शिव पुराण के एक कथा प्रसंग में जो कि भगवान शिव जी के मुख से उद्धृत है, में, बताया जाता है कि :–

समुद्र मंथन से अन्य रत्नों एवं दिव्य उद्भवों, जैसे कि, श्री लक्ष्मी जी, चंद्रमा, अमृत कलश आदि के साथ–साथ, देवी वृंदा का भी उद्भव होता है।

इसी करण से वृंदा जी को, श्री लक्ष्मी जी का बहन, एवं चंद्रमा जी को भाई माना जाता है।

अतः यह घटना भी, तुलसी पौधे के आध्यात्मिक महत्व को पुष्ट करते हुए, यह प्रमाणित करती है कि, तुलसी का अस्तित्व आदि काल से है, एवं, आज वर्तमान के प्रमाण को स्वीकार्य करते हुए यह भी कहना अतिशयोक्ति नहीं कि, आगे भी चिरकाल तक, पवित्र तुलसी पौधे का आध्यात्मिक महत्व स्थिर रहेगा।

05.तुलसी पवित्र पौधा

देवी वृंदा जिन्हें समुद्र मंथन द्वारा उद्‌भित, श्री लक्ष्मी जी का जन्म स्वरूप माना गया है, वृंदा के ही प्रतिकृत स्वरूप को तुलसी पौधे की मान्यता दी गई है तथा तुलसी को पवित्र एवं पावन कहा गया है।

ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार देवी वृंदा के श्राप के कारण भगवान विष्णु का शालिग्राम पत्थर ''शिला'' के रूप में अवतार हुआ था।

वृंदा, जो कि, कालनेमि नामक राक्षस की पुत्री एवं शिव के विकृत क्रोध अवतार स्वरूप जालंधर की पत्नी बताई गई हैं।

वृंदा और तुलसी कथा के अनुसार बताया जाता है कि देवी वृंदा, जो कि, राक्षस जालंधर की पत्नी थीं एवं श्री विष्णु जी के प्रति निष्ठ थीं। कथा क्रम में बताया गया है कि, वृंदा ने श्री विष्णु को श्राप दिया था कि, वह पत्थर के बन जाएंगे। ऐसा इसलिये क्योंकि, विष्णु, वृंदा के तप तेज रूपी जालंधर का रक्षा कवच क्षीण कर रहे थे।

जालंधर, जिसका भगवान शिव से युद्ध चल रहा था, उसकी पतिव्रता पत्नी के साथ विष्णु द्वारा किया गया छल ही जालंधर की पराजय एवं शिव जी द्वारा किये गए अंत का कारण बना।

तुलसी अवतरण

वृंदा का श्राप स्वीकार्य करते हुए जब भगवान विष्णु, शिला स्वरूप में शालिग्राम बन जाते हैं तब, समस्त चर–अचर एवं जगत के कल्याण हेतु सभी देवी–देवता वृंदा के पास आते हैं, एवं, प्रार्थना करते हैं कि वे, भगवान विष्णु को श्राप से मुक्त कर दें।

तब भक्ति पराकाष्ठा का परिचय देते हुए देवी वृंदा ने भगवान विष्णु को श्रापमुक्त कर दिया एवं स्वयं सती हो गईं।

श्राप मुक्त होने के पश्चात एवं देवी वृंदा के भक्ति निष्ठा से प्रसन्न होकर, भगवान विष्णु ने वृंदा को पौधा के रूप में जन्म लेने का वरदान दिया और कहा कि, मेरे पत्थर ''शिला'' स्वरूप शालिग्राम एवं वृंदा के वृक्ष स्वरूप ''तुलसी'' को सदैव साथ में पूजा जाएगा।

वरदान स्वरूप बृंदा के सती स्थल पर राख से एक पौधा उगा, जिसे भगवान विष्णु ने ''तुलसी'' नाम दिया।

श्री विष्णु जी ने अपने शालिग्राम रूपी अवतरण में देवी वृंदा के वृक्ष स्वरूप तुलसी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया।

आज भी प्रतिवर्ष कार्तिक माह की देव उठनी एकादशी के दिवस पर, तुलसी को भगवान विष्णु की पत्नी माना जाता है और, दोनों की पूजा की जाती है। इस पर्व को **तुलसी विवाह** के नाम से जाना जाता है।

तुलसी विवाह पर्व में, तुलसी पौधे के चारों ओर अष्टदल कमल बनाकर एवं विष्णु प्रतिमूर्ति शालिग्राम को स्थापित करके, विधिवत, वैदिक विधि से दोनों का विवाह संपन्न कराया जाता है, एवं सुखी दांपत्य जीवन प्राप्ति हेतु तुलसी की पूजा की जाती है।

तुलसी विवाह पर्व

मान्यता है कि जिस प्रकार से देवी वृंदा का, श्री विष्णु वरण करते हैं, तुलसी विवाह से जीवन में उसी प्रकार से ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होता है और सुख समृद्धि में वृद्धि होती है।

तुलसी विवाह, भगवान के शालिग्राम रूप और तुलसी के बीच अटूट बंधन का प्रतीक होने के साथ–साथ, तुलसी पौधे को दिव्य एवं एक पवित्र पौधा के रूप में प्रमाणित तथा स्थापित करता है।

06.तुलसी के दिव्य गुण

तुलसी के दिव्य गुण से आशय उस विशेषता से है जो कि, तुलसी को, वन क्षेत्र की अगणित पौध प्रजातियों के बीच की एक छोटी सी झाड़ी के स्थान से, मानव समाज के सबसे प्रमुख स्थल, गृह निवास स्थान के मुख्य प्रवेश द्वार अथवा आंगन की, विशेष पूजनीय विषय वस्तु बनाता है।

पुरातन समय अंतराल का यदि आज वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक आकलन करें तो, पुरातन समय में वैदिक ज्ञान एवं संस्कृतिक रीति ही सर्वोत्तम प्रमाणिकता के स्रोत हुआ करते थे। जहां कि, आज विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों एवं आधुनिक चिकित्सकीय ज्ञान को प्रयोग में लाया जाता है।

आधुनिक चिकित्सकीय ज्ञान को प्रयोग में लाते हुए इस बात की पुष्टि की गई है कि, घर के मुख्य प्रवेश द्वार स्थल अथवा आंगन क्षेत्र के खुले वातावरण में, जहां कि, पर्याप्त सूर्य का प्रकाश एवं हवा हो, तुलसी का पौधा लगाया जाना कल्याणकारी होता है।

कुछ मूलभूत तथ्य तुलसी पौधे के विषय में, जो कि, तुलसी के दिव्य गुणों को प्रमाणित करते हैं, निम्न प्रकार से है :–

तुलसी वृक्ष

तुलसी आकार–विस्तार में छोटा होते हुए भी, एवं, अन्य की अपेक्षा कम जीवन अवधि ''लगभग एक वर्ष'' के बावजूद, तुलसी के समस्त गुण वृक्ष के समान ही होते हैं न कि झाड़ी।

जैसा कि, यह स्पष्ट है कि, इसकी देखभाल करके इसे कुछ अधिक समय तक जीवित रखा जा सकता है, अर्थात, पौधे को लगातार काटकर–छांटकर, बीज बनने से रोक कर, और नई पत्तियों के विकास को प्रोत्साहित करके, तुलसी पौधे को 1 एवं 1–5 वर्ष से अधिक समय तक (कुछ उदाहरण में लगभग 8 वर्ष तक) जीवित रखा जा सकता है।

यद्यपि आकार एवं कम जीवन अवधि के अनुरूप, तुलसी पौधे को झाड़ी कहा जाता है किंतु तुलसी में वृक्षों की ही

भांति शाखा विस्तार एवं जड़ संरचना आदि होते हैं। इसी कारण से यदा कदा साहित्यिक ग्रंथों एवं पुराणों आदि में, तुलसी के अस्तित्व को वृक्ष की संज्ञा प्रदान की गई है।

सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार

यह पौधा नकारात्मक ऊर्जा का ह्रास एवं सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार करता है अर्थात तुलसी पौधे की उपस्थिति में चारों ओर का वातावरण शुद्ध होता है जिससे सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार होता है।

इसकी पत्तियों तथा फूलों से निकलने वाली या प्रसारित होने वाली सुगंध का प्रभाव कुछ इस प्रकार होता है कि आस–पास की समस्त नकारात्मक ऊर्जा का ह्रास होता है एवं तुलसी पौधे के सानिध्य से तनाव में कमी आती है

आधुनिक विधा से यह तथ्य प्रमाणित है कि तुलसी में मौजूद यूजेनॉल रोजमार्मिक एसिड और आर्सैनिक एसिड जैसे घटक तनाव से राहत दिलाने में मदद करते हैं

अवांछित जीवों को दूर करना

तुलसी पौधे के आस–पास के क्षेत्र से कीट–कृमि आदि दूर ही रहते हैं। तुलसी पौधे द्वारा प्रसारित सूक्ष्म कण जिन्हें की अडाप्टीन कहा जाता है, के कारण से, पौधे के चारों ओर के वातावरण में कीट पतंग आदि, नहीं पनप पाते हैं एवं साथ ही, मुख्य प्रवेश द्वार पर या आंगन में तुलसी पौधा लगे होने से यह इन्हें घर से भी दूर रखने का कार्य भी करती है।

अतः उपरोक्त तथ्यों के अनुसार यह सहज स्वीकार्य है कि, तुलसी पौधा दिव्य गुणों से परिपूर्ण है, और यही कारण है कि, चाहे पुरातन वैदिक ज्ञान एवं सांस्कृतिक रीति–रिवाज हों या आधुनिक वैज्ञानिक विधि, दोनों ने ही तुलसी पौधे को जीवन उपयोगी एवं कल्याणकारी बताया है, तथा, घर आंगन क्षेत्र में तुलसी पौधा लगाया जाना उचित कहा है।

हालांकि, आज वर्तमान तक तो नहीं किंतु निश्चित ही निकट भविष्य में जब, और अधिक उन्नत वैज्ञानिक विधि प्रयोग में होगी, तुलसी पौधे की दिव्यता को और अधिक प्रमाणित करते हुए इस बात को स्वीकार्य किया जाएगा कि, तुलसी पौधा द्वारा विसर्जित प्रकाश संश्लेषित प्राण वायु भी अन्य की अपेक्षा, विशेष गुणकारी होती है।

दिव्य तुलसी पौधा अपने संपूर्ण सर्वांग फूल पत्ती तना जड़ आदि के साथ संपूर्ण अपने जीवन काल में मानवीय समाज स्वास्थ्य एवं संस्कृति के प्रति सदैव समर्पित रहती है यही वह प्रत्यक्ष प्रमाण हैं जो कि तुलसी को दिव्य एवं पूजनीय बनाते हैं।

07.तुलसी आयुर्वेदिक महत्त्व

तुलसी एक पवित्र पौधा है, जिसे देवी का स्वरूप माना जाता है। इसकी महिमा का वर्णन वेद–पुराणों में भी स्पष्ट है।

तुलसी को ऋग्वेद में अद्वितीया नाम से बताया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है कि, ''एक तुलसी के जैसा दूसरा कोई नहीं''।

साथ ही, चिकित्सकीय महत्व को बताते हुए, वेदों में तुलसी को महौषधि कहा गया है। महौषधि का अर्थ है कि, यह सभी रोगों को नष्ट करने वाली महान औषधि है।

आयुर्वेदिक तुलसी

सरुपकृत त्वयौषधेसा,

सरुपमिद कृधि ।

श्यामा सरुप करती,

पृथिव्यां अत्यदभुता ।।

उपरोक्त प्रस्तुत श्लोक अथर्ववेद में वर्णित है, एवं, यह तुलसी के औषधीय एवं धार्मिक महत्व को दर्शाते हुए ''तुलसी'' जो कि, एक पवित्र पौधा है ''तुलसी को'' अमृत स्वरूप की संज्ञा देता है, अर्थात, तुलसी को एक ऐसी औषधि के रूप में प्रस्तुत करता है जो कि स्वरूपकृत है, यानी कि, रुप को सुधार करती है।

अतः तुलसी, मानव स्वास्थ्य स्वरूप को बढ़ाने वाली, त्वचा रोगों को दूर करने वाली, तथा, सुंदरता बढ़ाने वाली औषधि है।

तुलसी के दिव्य औषधीय गुणों से भरपूर होने के कारण ही, इसे जड़ी बूटियों की रानी माना जाता है, और, न केवल आयुर्वेद चिकित्सा में अपितु, सिद्ध एवं यूनानी चिकित्सा अथवा लोक चिकित्सा में भी, तुलसी का पुरातन समय से आज तक प्रयोग किया जाता रहा है।

यह सर्दियों के दौरान घरेलू उपचार के लिए लोकप्रिय है।

रीवा में, इसका उपयोग मच्छर नियंत्रण के लिए किया जाता है।

आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति

तुलसी के चिकित्सकीय आयुर्वेदिक महत्व को निम्न बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है :–

रोग प्रतिरोधक क्षमता

तुलसी में एंटी ऑक्सीडेंट एवं एंटी वायरल गुण होते हैं जो कि, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करते हैं।

वात–कफ शामक

तुलसी वात और कफ जनित दोषों को शांत करने मे मदद करती है एवं शरीर में संतुलन पैदा करने का काम करती है।

पाचन में सहायक

तुलसी पाचन क्रिया को बेहतर बनाने और अपच गैस सूजन जैसी पेट की समस्यायों को ठीक करने में मदद करती है।

श्वसन तंत्र के लिए फायदेमंद

तुलसी सर्दी–खांसी, अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी, श्वसन संबंधित समस्याओं में, राहत प्रदान करती है।

विषनाशक

तुलसी का प्रयोग विष के असर को कम करने में मदद करता है।

त्वचा के लिए लाभकारी

तुलसी, त्वचा संक्रमण जैसे कि, मुंहासे और एग्जिमा जैसी समस्याओं के साथ–साथ, खुजली एवं दाद के उपचार में भी लाभदायक होती है।

मानसिक स्वास्थ्य के लिए

तुलसी, तनाव और चिंता को कम करती है, एवं, मानसिक शांति प्रदान करती है।

दुर्गंधनाशक

यह शरीर की दुर्गंध को भी दूर करने में उपयोगी है।

पार्श्वशूल में लाभकारी

तुलसी पसलियों के दर्द को कम करने में भी सहायक है।

जैसा कि, पहले के अनुभाग तीन **तुलसी पौध प्रकार** में हमने, तुलसी पौधे के प्रकारों की व्याख्या के दौरान, तुलसी पौधे के औषधीय उपयोग से संबंधित प्रारंभिक परिचय प्राप्त किया है, अतएव, यहाँ केवल संदर्भित जानकारी साझा की जा रही है। साथ ही यह, **तुलसी एवं आधुनिक चिकित्सा** के अगले अनुभाग में भी जारी रहेगा।

उपयोग विधि

तुलसी का उपयोग निम्न प्रकार से किया जाता है :–

पत्तियां

तुलसी की पत्तियों को कच्चा खाया जा सकता है, चाय में डाला जा सकता है, या पेस्ट बनाकर त्वचा पर लगाया जा सकता है।

तेल

तुलसी बीजों से प्राप्त तेल, अरोमा थेरेपी में इस्तेमाल किया जा सकता है, या, त्वचा पर लगाया जा सकता है।

तुलसी पाउडर उत्पाद

तुलसी के पत्तों को सुखा कर, पाउडर बनाया जा सकता है, और फिर, पानी या शहद के साथ मिलाकर इस्तेमाल किया जा सकता है।

उपचार के प्रयोग में सावधानियां

उपचार के प्रयोग में कुछ महत्वपूर्ण सावधानियां निम्न प्रकार से हैं:—

01. गर्भवती और स्तनपान करने वाली महिलाओं को तुलसी का उपयोग, चिकित्सकीय परामर्श के अनुकूल ही करना चाहिए।
02. जिन्हें तुलसी से एलर्जी हो, उन्हें, तुलसी का उपयोग नहीं करना चाहिए।

03. तुलसी का अधिक मात्रा में सेवन करने से कुछ लोगों में पेट खराब होने की समस्या हो सकती है अतः चिकित्सकीय परामर्श के साथ ही संतुलित मात्रा में सेवन करना चाहिए।

04. तुलसी के बीज एवं फूल का प्रत्यक्ष उपयोग लगभग नहीं ही करना चाहिए।

05. तुलसी के ताजा पत्तों का अर्क ही सर्वोत्तम होता है, अतः हो सके तो स्वास्थ्य लाभ हेतु सदैव, ताजी पत्तियां ही प्रयोग में लानी चाहिए।

अतएव इस प्रकार यह स्पष्ट है कि, तुलसी एक शक्तिशाली जड़ी बूटी है, जिसका प्रयोग प्राचीन काल से ही, विभिन्न प्रकार की बीमारियों के इलाज के लिए, किया जाता रहा है। तुलसी एक सुरक्षित और प्रभावी स्वास्थ्य उपाय है। साथ ही, आज वर्तमान में भी, प्रारंभिक घरेलू स्वास्थ्य उपचार में तुलसी का प्रयोग, बहुतायत में किया जाता है।

आज के बढ़ते जटिल बीमारियों के इस दौर में भी, आधुनिक चिकित्सा के समावेश के साथ–साथ, तुलसी पौधे पर किए जाने वाले उन्नत अध्ययन एवं वैज्ञानिक प्रयोग के समावेश से, निःसंदेह ही भविष्य में भी, तुलसी स्वास्थ्य लाभ हेतु कल्याणकारी सिद्ध होगी।

08.तुलसी एवं आधुनिक चिकित्सा

जैसे–जैसे मानव समाज उन्नत की ओर अग्रसर हुआ है, वैसे ही, बिमारियों ने भी नये रुप एवं जटिलता के साथ मानवीय स्वास्थ्य को प्रभावित किया है। किंतु, मानवीय स्वास्थ्य का एक प्रमुख स्त्रोत है ''रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास'' एवं, पवित्र तुलसी में रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक गुण विशेष रूप से होते हैं।

आधुनिक चिकित्सा में तुलसी का प्रयोग

जैसा कि इसके एंटी आक्सीडेंट तथा एंटी बैक्टेरियल गुणों से प्रत्यक्ष है कि यह, रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने का काम करती है।

आज के आधुनिक चिकित्सकीय वैज्ञानिक ज्ञान एवं प्रयोग में लाये जाने वाले उन्नत (हाईटेक) उपकरणों का यदि, तुलसी पौधे के स्वास्थ्य वर्धक गुणों के साथ उचित समावेश किया जाता है तो, वर्तमान एवं भविष्य की कई स्वास्थ्य समस्याओं का निदान पुरातन चिकित्सकीय सुधार के समान ही संभव है।

आज वर्तमान समय तक तुलसी पौधे का स्वास्थ्य सुधार के विषय में, कई ऐसे पारंपरिक प्रयोग हैं जिनकी, वैज्ञानिक प्रमाणिकता के साथ पुष्टि की गई है।

हालांकि, अब भी कुछ पुरानी मान्यताएं शेष है, जिनके वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत नहीं हैं, फिर भी, तुलसी पौधे के चिकित्सकीय लाभ को सर्वसम्मत से स्वीकार्य किया जाता है।

तुलसी के चिकित्सकीय उपयोग, जो कि, पुरातन आयुर्वेदिक आदि पद्धति में प्रयोग किये गए तथा, आधुनिक चिकित्सा पद्धति में भी प्रमाण पुष्टि के साथ, प्रयोग में लाये जाते हैं, कुछ निम्न प्रकार से है :–

श्वसन तंत्र स्वास्थ्य

तुलसी के एंटी ऑक्सीडेंट, एंटी बैक्टेरियल, एवं, एंटी वायरल गुणों के आधार पर, श्वास एवं श्वसन तंत्र से संबंधित कुछ बीमारियां, जैसे कि, सर्दी–खांसी, जुकाम, अस्थमा, आदि में, तुलसी का प्रयोग, प्राचीन आयुर्वेदिक उपचार के साथ ही, आज के आधुनिक चिकित्सा में भी होता है।

संक्रमण एवं बुखार

एंटी फंगल एवं एंटी बायोटिक गुणों के आधार पर, जीवाणु संक्रमण एवं बुखार के सामान्य निवारण में, तुलसी का प्रयोग किया जाना हितकर होता है। यह मलेरिया आदि बिमारियों में भी, स्वास्थ्य को ठीक करने का काम करती है।

पाचन सुधार

आयुर्वेद एवं आधुनिक चिकित्सा दोनों ही विधाओं में, तुलसी का पाचन को ठीक करने मे एवं, पेट की सुजन आदि में, उपयोग किया जाता है।

त्वचा उपचार

एंटी माइक्रोबियल गुण के आधार पर, तुलसी का उपयोग, त्वचा से संबंधित रोग निदान के लिए, आज के वर्तमान चिकित्सा पद्धति में भी, पुरातन आयुर्वेदिक उपचार विधि की भांति ही, किया जाता है।

तनाव एवं मानसिक स्वास्थ्य

तुलसी तनाव को कम करने एवं मानसिक स्वास्थ्य में वृद्धि करने का काम करती है। मेटाबोलिक अनियमितता सुधार हेतु तुलसी का, आधुनिक बीमारी, टाइप–2–डायबिटीज के उपचार में, प्रयोग किया जाता है। यह रक्त शर्करा को कम करने का काम करती है।

तुलसी का वैज्ञानिक नाम *ओसिमम टेनुइफ्लोरम* प्रयोग में लाया जाता है।

साथ ही, आधुनिक वैज्ञानिक माप विधि– **फाइटो केमिकल संरचना मापन** जिसके द्वारा, किसी भी पौधा प्रजाति विशेष में मौजूद विभिन्न अवयवों और रसायनों की पहचान की जाती है।

तुलसी, अर्थात **ओसिमम टेनुइफ्लोरम** में, फाइटो केमिकल संरचना मापन द्वारा पाए गए अवयवों एवं रसायनों का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार से है:–

तुलसी का फाइटो केमिकल विश्लेषण

यूजेनॉल

लौंग जैसी खुशबू वाला यह रसायन, एक फेनिल प्रोपीन है, जो कि, अपने एंटी सेप्टिक, सुजन रोधी और एंटी ऑक्सीडेंट गुणों के लिए जाना जाता है।

लेमन तुलसी में यह रसायन, तुलसी की अन्य प्रजातियों की अपेक्षा ज्यादा पाया जाता है।

एस्ट्रागाल

एस्ट्रागाल को अन्य नाम में मिथाईल चौविकॉल भी कहते हैं। यह एक फेनिल प्रोपीन है, जिसमें कि, मीठी सौंफ जैसी सुगंध होती है।तुलसी के इस घटक के रोगाणुरोधी एवं एंटी ऑक्सीडेंट प्रभाव दर्शाये गये हैं।

होअरी तुलसी प्रजाति में इस अवयव की मात्रा, अन्य तुलसी प्रजातियों से अधिक पायी जाती है।

लिनालूल

लिनालूल, पुष्प सुगंध वाला एक टेरपीन अल्कोहल है, जो कि, अपने शांतिदायक और तनाव मुक्त गुणों के साथ–साथ, संभावित रोगाणुरोधी गतिविधि के लिए जाना जाता है।

लगभग तुलसी की सभी प्रजातियों में लिनालूल पाया जाता है।

ओसीमीन

तुलसी का यह घटक, मीठी, लकड़ी के जैसी सुगंध वाला मोनो टेरपीन है, जो कि, अपनी संभावित सुजनरोधी और रोगाणुरोधी प्रभावों के लिए जाना जाता है।

यह भी लगभग तुलसी की सभी प्रजातियों में पाया जाता है।

पिनीन

पिनीन एक बाइसाइक्लिक मोनोटेरपीन है। इसमें से, चीड़ के जैसी गंध होती है। और यह, अपनी ब्रोंकोडायलेटिंग तथा सूजन रोधी गुणों के लिये जाना जाता है।

यह रसायन कम मात्रा में एवं सभी तुलसी पौधा प्रजातियों में होता है।

सिनेमोल

पुदीने जैसी या कपूर जैसी सुगंध वाला यह एक मोनोटेरपीन है, जो कि, अपनी संभावित श्वसन संबंधित लाभ और रोगणुरोधी गतिविधि के लिए जाना जाता है।

सिनेमोल भी लगभग समस्त तुलसी पौधा प्रजातियों का अवयव है।

एथेनॉल

तुलसी में मौजूद यह रसायन एक फेनिल प्रोपीन है, इसमें से, मीठी, नद्यपान जैसी सुगंध होती है, जो कि, सौंफ में भी पायी जाती है।

थाईमोल

थाईमोल एक मोनोटेपेनोइड फिनोल है, जिसमें, तीव्र गंध होती है।तुलसी में पाया जाने वाला यह अवयव अपने एंटी सेप्टिक, एंटी फंगल और एंटी आक्सीडेंट गुणों के लिए जाना जाता है।

सिट्रल

नींबू के जैसी सुगंध वाला एवं नींबू में भी पाया जाने वाला यह एक मोनो एल्डिहाइड है।

तुलसी का यह रासायनिक घटक अपने रोगणुरोधी और एंटी ऑक्सीडेंट गुणों के लिए जाना जाता है।

कपूर

कपूर एक चक्रीय कीटोन है एवं कपूर तुलसी में इसकी मात्रा अधिक होती है।

इस कीटोन में तीव्र सुगंध होती है, तथा यह, अपने संभावित सर्दी–खांसी दूर करने वाला और दर्द–निवारक विशेषताओं के लिए जाना जाता है।

इस प्रकार उपरोक्त प्रस्तुत आधुनिक चिकित्सकीय विश्लेषण इस बात की पुष्टि करता है कि, ये यौगिक जिन पौधों में होते हैं, उन पौधों के विविध औषधीय और सुगंधित गुणों में योगदान करते हैं।

अतः यह स्पष्ट है कि, पवित्र तुलसी के समस्त घटक, तुलसी को, पारंपरिक रूप से, विभिन्न प्रयोजनों के लिए उपयोगी बनाते हैं।

तुलसी की खेती स्थायित्व और रोजगार को बढ़ावा देती है। विस्तार के साथ, रीवा के किसान आवश्यक तेलों के आसवन के लिए सहकारी समितियाँ बना सकते हैं, जो भारत के हर्बल बाजार से जुड़ सकती हैं।

तुलसी के दिव्य, आध्यात्मिक, आयुर्वेदिक, धार्मिक, आदि विशेषता को देखते हुए, तुलसी के विस्तार एवं प्रसार से संबंधित विषय, अग्रिम, **तुलसी एवं पौध रोपणी** तथा **तुलसी व्यवसायिक कृषि** विषयवस्तु अंतर्गत, प्राप्त करेंगे।

तुलसी के पौधे हवा को शुद्ध करते हैं, ऑक्सीजन और यूजेनॉल जैसे वाष्पशील यौगिक छोड़ते हैं। रीवा में, स्कूलों द्वारा संचालित तुलसी के बगीचे मध्य प्रदेश की हरित पहलों के अनुरूप, पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा देते हैं।

समकालीन संदर्भों में, वायु शोधन और तनाव निवारण में तुलसी की भूमिका को वैज्ञानिक मान्यता प्राप्त हो गई है, जिससे प्रदूषण संबंधी चिंताओं के बीच यह शहरी भारतीय घरों में एक अनिवार्य वस्तु बन गई है।

09.तुलसी एवं पौध रोपणी

तुलसी पौध रोपणी का आशय है, तुलसी प्रजाति के पौधों को व्यवस्थित तरीके से , और अधिक संख्या में, एक निर्धारित स्थल ''रोपणी'' में तैयार करना, जहां से तैयार किए गए पौधे, अन्यत्र वृक्षारोपण अथवा आवश्यकता अनुसार विक्रय हेतु उपलब्ध कराये जाते हैं। अर्थात तुलसी के रोपणी में वितरण या बिक्री के लिए पौधों को बड़े पैमाने पर व्यवस्थित रूप से तैयार करना शामिल है।

तुलसी पौध रोपणी

पौध रोपणी के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिंदु, जो कि, रोपणी संचालन के विषय में आवश्यक होते हैं, निम्न हैं :—

01. पौधे का बीज द्वारा उत्पादन

02. अन्य वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रयोग द्वारा उत्पादन

01.पौधे का बीज द्वारा उत्पादन —

पौधे का बीज द्वारा उत्पादन के, प्रमुख चरण, निम्न प्रकार से हैं:—

—बीज चक्र

—बीज उपचारण, संग्रहण तथा भंडारण

—क्षेत्र तैयारी

—बीज बुवाई

—पौधा देखरेख एवं सुरक्षा

तुलसी बीज चक्र –

तुलसी पौधा चूंकि एक वर्षीय श्रेणी का पौधा है अतः तुलसी के विकसित पौधे से बीज का उत्पादन लगभग प्रतिवर्ष ही होता है।

तुलसी के बीजों के संग्रहण का उपयुक्त समय तब होता है जबकि, पुष्प गुच्छ हरे रंग से रंग परिवर्तित करके, भूरे रंग के हो जाते हैं।

परिपक्व बीज, फूलों के भूरे रंग तथा शुष्क अवस्था के दौरान संग्रहित किए जाते हैं।

अतः तुलसी पौधे से बीज संग्रहण सामान्यतया ग्रीष्म ऋतु के प्रारंभ से, वर्षा ऋतु के पूर्व तक, अर्थात, माह जून में किया जाता है।

बीज उपचारण संग्रहण तथा भंडारण –

तुलसी पौधे के बीजों को पूर्ण परिपक्व अवस्था के पश्चात ही संग्रहित करना चाहिए, जिससे कि, बीजों से पुनरुत्पादन अच्छा प्राप्त हो।

तुलसी पौधे के फल

तुलसी में फूलों के भूरे रंग की अवस्था प्राप्ति के साथ–साथ ही, फल पूर्ण विकसित हो जाते हैं एवं फूलों के शुष्क होने के पश्चात से, बीज संग्रहण योग्य हो जाते हैं। तुलसी के बीज प्रायः जून माह के प्रारंभ से वर्षा प्रारंभ होने के पूर्व तक में संग्रह किये जाते हैं।

संग्रहण के पश्चात तुलसी के बीजों को पेपर बैग में रख कर, शुष्क वातावरण में इस प्रकार सुखाकर कि, बीजों में नमी की मात्रा न रह जावे, एवं सूखने के पश्चात उचित प्रकार से, वायु रोधी पात्र, जैसे कि, कांच या प्लास्टिक में रख कर, भंडारित किया जाता है।

इन भंडारित बीजों को उसी वर्ष अथवा अधिकतम दो वर्ष तक, रोपण कार्य में उपयोग किया जा सकता है।

बुवाई के समय अन्य बीजों की तरह ही तुलसी बीज भी, उपचारित किये जाते हैं। बीज उपचारण से तात्पर्य, बीजों को बुवाई के पूर्व बीज की सुषुप्तावस्था को जागृत करने के उद्देश्य से किये जाने वाले प्रयोजन से है।

हालांकि, तुलसी के बीजों को बुवाई के पूर्व किसी विशेष उपचारण की आवश्यकता नहीं होती है, फिर भी, उपयुक्तता की दृष्टि से, बुवाई पूर्व बीजों को 8 से 12 घंटे तक ठंडे सामान्य जल में भिगोकर रखना उचित होता है।

ग. क्षेत्र तैयारी

बीज बुवाई हेतु क्षेत्र तैयारी से तात्पर्य, खेत तैयारी, मिट्टी तैयारी, अथवा उस माध्यम से है जिनमें, बीजों की बुवाई की जानी है।

रोपणी में सामान्यतया उपजाऊ मिट्टी, अकार्बनिक जैविक खाद एवं रेत का संतुलित मिश्रण उपयोग किया जाता है।

बीज बुवाई हेतु क्षेत्र तैयारी

इस मिश्रण को या तो छोटी–छोटी क्यारी में बिछाकर अथवा छोटी–छोटी पॉलिथीन थैली में भरकर, इसी मिश्रण में बीज बोए जाते हैं।

घ. बीज बुवाई

तुलसी के बीजों की बुवाई इस प्रकार करनी है की, बीज मिट्टी के अंदर लगभग 1 सेंटीमीटर की गहराई में दबे हों।

इसके लिए उपयुक्त तरीका यह है कि, तुलसी के बीजों को ऊपरी सतह पर फैला कर बिछा दें एवं, बीज से बीज की दूरी लगभग 2 सेंटीमीटर रखते हुए, बीजों को सतह पर फैलाने के पश्चात, बीजों के ऊपर मिट्टी, खाद, एवं रेत का मिश्रण, इस प्रकार से ढकें कि, ऊपरी परत की मोटाई अधिकतम 1 सेंटीमीटर हो।

तुलसी बीजों को अंकुरित होने के लिए पर्याप्त धूप यानि कि, 21 डिग्री सेल्सियस से 24 डिग्री सेल्सियस तापमान एवं नमी अर्थात, जल की पर्याप्त मात्रा की आवश्यकता होती है।

सिंचाई के समय इस बात का ध्यान रखना है की नमी तो बनी रहे किंतु जल भराव की स्थिति न हो, क्योंकि, तुलसी के बीज छोटे आकार के होते हैं एवं जल भराव की स्थिति में बीजों के सड़ने अथवा फंगस आदि के लगने की संभावना रहती है। अतः क्यारी या पॉलिथीन थैली में जल निकासी की उचित व्यवस्था होनी चहिए।

ड. पौधा देखरेख एवं सुरक्षा

बीज बुवाई के पश्चात, ऊपरी सतह को सूखे हुए खरपतवार, धान पैरा आदि से, ढक दें तथा, अंकुरण आ जाने के पश्चात ढकी हुई सतह को हटा दें ।

अंकुरण विकसित होने के पश्चात पौधे को पोषण हेतु उपयुक्त खाद दें तथा बीमारी से बचाव हेतु कीटनाशक का छिड़काव करें।

समय–समय पर अन्य खरपतवार को निदाई करके हटा दें तथा आवश्यकता अनुसार सिंचाई करते रहें।

चूंकि तुलसी पौधा ठंड वातावरण के प्रति संवेदनशील होता है अतः हो सके तो पौधा क्षेत्र को ग्रीन शेड नेट से ढक कर सुरक्षित कर दें।

हरा ''ग्रीन'' शेड नेट या पॉली शेड, पौधों के अंकुरण क्षेत्र को कवर करने के लिए एक व्यवस्था है। यह व्यवस्था, पौधों की वृद्धि को, आसपास के पर्यावरणीय परिवर्तनों से बचाने में मदद करती है। इसका उपयोग पौधों के नर्सरी तकनीकों में व्यापक रूप से किया जाता है।

पाली शेडेड पौध रोपणी

तुलसी के बीजों को अंकुरण हेतु वर्षा काल, उपयुक्त प्राकृतिक वातावरण होता है।

बुवाई के पश्चात लगभग 8 से 12 दिवस अंतराल में, अंकुरण प्रारंभ हो जाता है, एवं, अंकुरण के पश्चात लगभग 10 से 12 दिवस अंतराल में, यह पौधे गमले अथवा पॉलिथीन थैली में स्थानांतरित किये जाने के योग्य, तैयार हो जाते हैं।

02. अन्य वैज्ञानिक मूल्यांकन प्रयोग द्वारा पुनरुत्पादन

इसके अंतर्गत किसी पौधे के पुनरुत्पादन के लिए निम्न विधाएं प्रयोग में लाई जाती हैं :–

क. पौध ऊतक संवर्धन

ख. पौध ग्राफ्टिंग

ग. पौध संकरण

क. पौध ऊतक संवर्धन

ऊतक संवर्धन विधि से रोपणी मे तुलसी को उगाया जा सकता है ऊतक संवर्धन एक ऐसी तकनीक है जिसमें जीवित पौधे के ऊतक के छोटे–छोटे टुकड़े को प्रयोगशाला में उगाया जाता है अर्थात पौधों में ऊतक संवर्धन कृत्रिम वातावरण में पौधे के ऊतकों को विकसित करने की तकनीक है जो कि पौधे के प्रसार एवं आनुवांशिक सुधार के लिए उपयोगी है।

तुलसी के पौधे को ऊतक संवर्धन विधि से प्रसारित करने की प्रक्रिया के क्रमागत चरण निम्न अनुसार हैं–

तुलसी के पौधे का ऊतक संवर्धन विधि द्वारा पुनरूत्पादन

पौधे का हिस्सा

एक स्वस्थ एवं विकसित तुलसी के पौधे से एक छोटा सा भाग जैसे कि टहनी या शीर्ष का नोड लिया जाता है।

साफ करना

पौधे के लिए गए इस हिस्से को पानी या साबुन से धोकर साफ किया जाता है और फिर, इसे एक जीवणुनाशक घोल में कुछ समय के लिए रख दिया जाता है।

पोषक माध्यम

पोषक माध्यम, प्रयोगशाला में, एक विशेष प्रकार से तैयार किया गया घोल होता है, जो कि, पौधे के टिशु को आवश्यक पोषक तत्व और खनिज प्रदान करता है।

इसी पोषक माध्यम में पौधे के छोटे छोटे टुकड़े रख दिए जाते हैं।

पोषक माध्यम

पादप ऊतक संवर्धन

पादप ऊतक संवर्धन एक तकनीक है जिसका उपयोग पोषक माध्यम पर नियंत्रित, बाँझ वातावरण में पादप कोशिकाओं, ऊतकों या अंगों की खेती के लिए किया जाता है । यह विधि, जिसे माइक्रोप्रोपेगेशन के नाम से भी जाना जाता है , आनुवंशिक रूप से समान पौधों (क्लोन) के तीव्र और बड़े पैमाने पर उत्पादन की अनुमति देती है और अनुसंधान और वाणिज्यिक अनुप्रयोगों दोनों में एक मूल्यवान उपकरण है।

यहाँ अधिक विस्तृत जानकारी दी गई है

महत्वपूर्ण अवधारणाएं:

पूर्णशक्ति

पादप ऊतक संवर्धन टोटिपोटेंसी के सिद्धांत पर निर्भर करता है, जो एक एकल पादप कोशिका की एक पूर्ण पादप में विकसित होने की क्षमता है।

इन वर्टो कल्चर

इस प्रक्रिया में पौध सामग्री (एक्सप्लांट) को प्रयोगशाला में पोषक तत्वों से भरपूर माध्यम में उगाया जाता है, आमतौर पर संदूषण को रोकने के लिए जीवाणुरहित परिस्थितियों में।

सूक्ष्मप्रवर्धन

ऊतक संवर्धन का एक विशिष्ट अनुप्रयोग, सूक्ष्मप्रवर्धन, मूल पौधे की सामग्री के एक छोटे टुकड़े से अनेक समान पौधे उत्पन्न करने पर केंद्रित है।

अनुप्रयोग

बड़े पैमाने पर प्रसार

ऊतक संवर्धन पौधों के तीव्र गुणन को संभव बनाता है, विशेष रूप से उन पौधों को जिनका पारंपरिक रूप से प्रचार करना कठिन होता है (जैसे, ऑर्किड, कुछ फलों के पेड़)।

रोग उन्मूलन

ऊतक संवर्धन का उपयोग रोगाणु–मुक्त पौधों के उत्पादन के लिए किया जा सकता है, क्योंकि कुछ ऊतक (जैसे मेरिस्टेम) संक्रमण के प्रति कम संवेदनशील होते हैं।

आनुवंशिक सुधार

ऊतक संवर्धन तकनीक आनुवंशिक परिवर्तन और वांछनीय लक्षणों वाले ट्रांसजेनिक पौधों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है ।

जर्मप्लाज्म संरक्षण

ऊतक संवर्धन, पौधों के आनुवंशिक संसाधनों को संरक्षित करने की एक विधि प्रदान करता है, विशेष रूप से लुप्तप्राय या दुर्लभ प्रजातियों के लिए।

अनुसंधान

ऊतक संवर्धन पादप शरीर क्रिया विज्ञान, आनुवंशिकी और विकास के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

बुनियादी कदम

प्रत्यारोपण चयन संवर्धन आरंभ करने के लिए उपयुक्त पादप ऊतक (जैसे, प्ररोह शीर्ष, पत्ती खंड) का चयन करना।

सतह बंध्याकरण सूक्ष्मजीवों को खत्म करने के लिए एक्सप्लांट को कीटाणुरहित करना।

संस्कृति मीडिया तैयारी आवश्यक मैक्रो और माइक्रोन्यूट्रिएंट्स, विटामिन, कार्बन स्रोत (आमतौर पर चीनी) और पौधों की वृद्धि नियामकों के साथ पोषक माध्यम का निर्माण करना।

टीकाकरण निष्फल एक्सप्लांट को संवर्धन माध्यम पर रखना।

ऊष्मायन संस्कृति के विकास के लिए नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियां (तापमान, प्रकाश, आर्द्रता) प्रदान करना।

उपसंस्कृति बढ़ते हुए ऊतक को उसकी वृद्धि और विकास को बनाए रखने के लिए समय–समय पर ताजा माध्यम में स्थानांतरित करना।

पौध विकास और अनुकूलन पौधों को जड़ें विकसित करने की अनुमति देना और फिर धीरे–धीरे उन्हें ग्रीनहाउस या खेत के वातावरण में लाना।

नियंत्रित वातावरण

नियंत्रित वातावरण से तात्पर्य है, प्रयोगशाला में, कृत्रिम तौर पर बनाया गया चेंबर। जिसमें कि, पोषक माध्यम को, अनुकूल एवं नियंत्रित वातावरण में रखा जाता है।

नियंत्रित वातावरण में तापमान, प्रकाश, नमी आदि, कृत्रिम रूप से नियंत्रित रहते हैं।

नए पौधे का विकास

कुछ हफ्तों बाद पोषक माध्यम में रखे टिशु सैम्पल, नए पौधे के रूप में विकसित होने लगते हैं।

पौधे क का स्थानांतरण

इन छोटे–छोटे पौधों को, बीज द्वारा अंकुरित पौधों के समान ही, गमले अथवा पॉलिथीन थैली में स्थानांतरित कर दिया जाता है।

कम जगह में तथा बड़ी संख्या में पौधे प्राप्त करने के लिए, ऊतक संवर्धन उपयुक्त विधा है।

तुलसी ऊतक संवर्धन

ऊतक संवर्धन विधि द्वारा तैयार किए जाने वाले तुलसी के पौधों की विशेषता यह है कि, यह पौधे रोग मुक्त होते हैं, तेजी से प्रसार करते हैं, एवं, सभी पौधे लगभग एक समान होते हैं।

ख.पौध ग्राफ्टिंग

तुलसी पौधे का ग्राफ्टिंग प्रसार एक आसान और प्रभावी तरीका है। इस विधा में स्वस्थ तुलसी के पौधे से कटिंग यानि कि एक छोटा सा हिस्सा लिया जाता है जिसे, पानी या मिट्टी में लगाया जाता है। लगाने के कुछ समय बाद कटिंग के एक हिस्से में जड़ें विकसित होना प्रारंभ होती हैं एवं दूसरे सिरे से नई पत्तियों का निकलना प्रारंभ होता है।

तुलसी पौधे का ग्राफ्टिंग

ग्राफ्टिंग विधि के चरण निम्न हैः—

पादप ग्राफ्टिंग में ऊतक पुनर्जनन का उपयोग करके ''स्कियन'' (ऊपरी भाग) और ''रूटस्टॉक'' (निचला भाग) को एक एकल, बढ़ते पौधे में संयोजित किया जाता है । इस प्रक्रिया में घाव भरना, ऊतक आसंजन, कोशिका विभाजन और संवहनी पुनः संयोजन शामिल है, जो पौधों के अलैंगिक प्रसार को संभव बनाता है। ग्राफ्ट जंक्शन पर पुनर्जनन आणविक संकेतों, फाइटो हार्मोन और एक सफल संयोजन बनाने के लिये उल्लेखनीय कोशिकीय क्षमता पर निर्भर करता है, जिससे उन्नत लक्षणों वाले आनुवंशिक रूप से संयुक्त पौधों का निर्माण संभव हो पाता है।

ग्राफ्ट पुनर्जनन की प्रक्रिया

1. घाव भरनेः जब कलम और मूलवृंत जुड़ जाते हैं, तो उनमें घाव हो जाता है, जिससे घाव भरने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है।
2. कोशिकीय प्रतिक्रियाः ग्राफ्ट जंक्शन पर पादप कोशिकाएं विभाजित होकर विभेदित होकर प्रतिक्रिया करती हैं।
3. ऊतक आसंजनः कलम और मूलवृंत की कटी हुई सतहें एक दूसरे से चिपकी रहती हैं।
4. संवहनी पुनःसंयोजनःमहत्वपूर्ण बात यह है कि संवहनी ऊतकों (जाइलम और फ्लोएम) को ग्राफ्ट में विभेदित और पुनः संयोजित होना चाहिए, जिससे जल और पोषक तत्वों का परिवहन संभव हो

ग्राफ्ट पुनर्जनन का महत्व एवं पुनर्जनन को प्रभावित करने वाले कारकः
अलैंगिक प्रजननः ग्राफ्टिंग अलैंगिक (वानस्पतिक) प्रजनन के लिए एक महत्वपूर्ण विधि है, विशेष रूप से बागवानी और कृषि उद्योगों में।
संयंत्र सुधारः इससे चिमेरा (संयुक्त पौधे) का निर्माण संभव हो जाता है, जो अधिक सशक्त, रोगों के प्रति लचीले तथा तनावपूर्ण वातावरण के लिए बेहतर रूप से अनुकूलित हो सकते हैं।
पादप जीव विज्ञान को समझनाः ग्राफ्ट जंक्शनों पर पुनर्जनन तंत्र का अध्ययन करने से पौधों के मौलिक पुनर्जनन मार्गों के बारे में जानकारी मिलती है तथा पौधों में स्वध्अस्व पहचान का आधार मिलता है।
पादप आनुवंशिकीः दो पौधों की सफलतापूर्वक ग्राफ्टिंग करने की क्षमता उनकी आनुवंशिक अनुकूलता पर निर्भर करती है।
आणविक तंत्रः विशिष्ट आणविक मार्ग और गतिशील अणु पुनर्जनन प्रक्रिया के संकेतन और समन्वय में शामिल होते हैं।
पर्यावरणीय स्थितियाँः जैविक और अजैविक कारक ग्राफ्ट निर्माण की सफलता को प्रभावित कर सकते हैं।
5. हार्मोनल विनियमनः फाइटोहॉर्मोन इन पुनर्योजी प्रक्रियाओं को विनियमित करने और सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कटिंग लेना

तुलसी पौधे से एक 4–6 इंच लंबा तना काटकर पत्ती के नोड के ठीक नीचे लगभग 45 डिग्री कोण मान पर कट लगाया जाता है, एवं साथ ही तने के निचले हिस्से से पत्तियां काट कर हटा दी जाती है।

पानी में जड़ना

कटिंग को पानी से भरे एक साफ कंटेनर में इस प्रकार रखकर कि आधा हिस्सा पानी में डूबा रहे एवं आधा हिस्सा पानी से बाहर रहे। कुछ हफ्तों बाद पानी वाले हिस्से मे जड़ विकसित होने लगती है।इस बात का ध्यान रखना है कि पर्याप्त धूप एवं हवा रहे साथ ही निश्चित समय अंतराल पर कंटेनर के पानी को भी बदलते रहना चाहिए।

मिट्टी में लगाना

जब कटिंग में पर्याप्त जड़ विकसित हो जाती है तब इसे कंटेनर से निकाल कर मिट्टी में लगाया जाता है एवं पौधे की रूप मैं विकसित हो जाने तक देखभाल की जाती है। ग्राफ्टिंग विधा द्वारा तैयार किए गए तुलसी के पौधों की प्रमुख विशेषता यह है कि यह पौधे अनुवांशिक वृद्धि के लक्षण प्रस्तुत करते हैं।

ग.पौध संकरण

तुलसी पौधे को पौध वर्ण संकरण विधा द्वारा भी विकसित किया जाता है किंतु तुलसी पौधे का संकरण एक जटिल प्रक्रिया है जो कि कई कारकों पर निर्भर करती है जैसे कि पौधे की किस्म जिससे संकरण किया जाना है वातावरण जिसमें संकरण प्राप्त करना है एवं संकरण तकनीक

तुलसी के पौधे मे दो मुख्य प्रकार के संकरण होते हैं

पहला है बीज के माध्यम से संकरण एवं इस संकरण के चरण में बीज बोना पौधे का विकास पौधे का रखरखाव फूलों का उत्पादन तथा बीज प्राप्ति सम्मिलित है।

पादप संकरण, आनुवंशिक रूप से विविध पौधों के क्रॉस–ब्रीडिंग की प्रक्रिया है, जिससे वांछनीय गुणों का संयोजन होता है, जिससे उच्च उपज, रोग प्रतिरोधकता या बेहतर गुणवत्ता जैसी लाभकारी विशेषताओं वाली नई किस्में बनती हैं । यह प्राकृतिक या कृत्रिम तकनीक आनुवंशिक विविधता पैदा करती है, विषमयुग्मकता को बढ़ाती है और वाणिज्यिक प्रयोजनों के लिए फसल पौधों में सुधार करने के लिए नए जीन संयोजन बनाती है। ग्रेगर मेंडल के कार्य के बाद से यह फसल सुधार के लिए एक प्रमुख विधि रही है और हरित क्रांति के लिए आवश्यक थी।

पादप संकरण के उद्देश्य

आनुवंशिक विविधता बनाएं:
यह नए जीन संयोजनों को प्रस्तुत करता है, जिससे चयन के लिए विविध नए पौधे सामने आते हैं।

वांछनीय गुणों को संयोजित करें:
यह विभिन्न मूल पौधों से अनुकूल विशेषताओं, जैसे उच्च उपज, अच्छी गुणवत्ता और कीट प्रतिरोधिता को एक एकल संकर में लाता है।

संकर शक्ति उत्पन्न करें:
संकर पौधे अपने माता–पिता की तुलना में बेहतर विकास और जीवन शक्ति प्रदर्शित कर सकते हैं, इस घटना को ''संकर शक्ति'' के रूप में जाना जाता है।
पादप संकरण के प्रकार
माता–पिता के बीच आनुवंशिक संबंध के आधार पर:

अंतर–किस्म (अंतर–विशिष्ट): एक ही प्रजाति के भीतर विभिन्न किस्मों का संकरण (जैसे, संकर मक्का)।

अंतर–विशिष्ट **संकरण:** एक ही वंश के अंतर्गत विभिन्न प्रजातियों का संकरण (जैसे, गेहूं और राई)।

अंतर–जेनेरिक संकरण : विभिन्न प्रजातियों के पौधों का संकरण (जैसे, मूली • गोभी)।
कृत्रिम संकरण की प्रक्रिया

नपुंसकता : स्व–परागण को रोकने के लिए मादा जनक पुष्प से पुंकेसर (नर भाग) को तब हटा दिया जाता है जब वह अभी भी कली अवस्था में होता है।

बैगिंग: अवांछित पराग से बचाने के लिए नपुंसक फूल को प्लास्टिक की थैली से ढक दिया जाता है।

पराग संग्रह: पराग कण नर जनक पौधे से एकत्र किये जाते हैं।

परागण : पराग को नपुंसक मादा पुष्प के वर्तिकाग्र पर छिड़का जाता है।

पुनः बैगिंग: संदूषण को रोकने के लिए परागित फूल को पुनः एक थैले से ढक दिया जाता है।

टैगिंग: फूल पर एक लेबल लगा होता है जिस पर माता–पिता और परागण तिथि के बारे में विवरण होता है।

दूसरा संकरण है कटिंग के माध्यम से तथा इसके चरण अंतर्गत कटिंग लेना कटिंग लगाना पौधे का विकास पौधे का रखरखाव, फूलों का संकरण करना तथा संकरित बीज प्राप्ति सम्मिलित हैं।

तुलसी एक स्वपरागण करने वाला पौधा है जिसका अर्थ है कि यह अपने ही पराग कण से परागण कर सकता है। तुलसी का क्रॉस परागण भी संभव है जो विभिन्न किस्मों या प्रजातियों के बीच संकरण पैदा कर सकता है।

इस संकरण विधा का प्रयोग मुख्य रूप से एकदम नई प्रकार की किस्म को विकसित करने के लिए किया जाता है।

रीवा में, व्यावहारिक सुझावों के साथ, जैविक खाद के साथ मिट्टी के गमलों में पौधे लगाने से वृद्धि को बढ़ावा मिलता है।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णित विधियों का उपयोग रोपणी अतंर्गत स्वस्थ्य तुलसी पौधा एवं अधिक मात्रा में तैयार करने के लिए किया जाता है एवं रोपणी में तैयार किए गए पौधे का अन्यत्र रोपण किया जाता है

10.तुलसी व्यवसायिक कृषि

तुलसी पौधे में पाए जाने वाले औषधीय गुणों के महत्व के कारण से, तुलसी पौधे से प्राप्त होने वाले विभिन्न उत्पादों, जैसे कि, पत्ती, बीज, अर्क, लकड़ी इत्यादि की उपयोगिता, मानव जीवन में चिरकालिक एवं निरंतर है तथा आगे भी रहेगी।

''संरक्षण प्रयास'':

मध्य प्रदेश में स्थानीय गैर–सरकारी संगठन किसानों को जैविक तुलसी की खेती का प्रशिक्षण दे रहे हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए इसके औषधीय और आध्यात्मिक मूल्य का संरक्षण हो रहा है।

तुलसी की व्यावसायिक खेती इसके पवित्र और औषधीय गुणों को एक लाभदायक उद्यम में बदल देती है, जिससे भारत के हर्बल उद्योग को बढ़ावा मिलता है।

रीवा में, जहाँ कृषि ही आजीविका का मुख्य आधार है, तुलसी की खेती आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ प्रदान करती है। जलवायु परिवर्तन के कारण रीवा की वर्षा पद्धति प्रभावित हो रही है, इसलिए सामुदायिक वृक्षारोपण तुलसी के अस्तित्व को सुनिश्चित कर रहा है।

आज वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में तुलसी पौधे के व्यवसायिक महत्व को निम्न प्रकार से विभक्त किया जा सकता है:–

01. पूर्णतः तुलसी उत्पाद पर आधारित व्यवसायिक उत्पाद।

02. तुलसी एवं अन्य के सम्मिश्रण से बने व्यवसायिक उत्पाद।

तुलसी पौधे के औषधीय महत्व सौंदर्य वर्धक गुणों तथा धार्मिक प्रयोजन के आधार पर विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक उत्पाद प्रयोग किये जाते हैं। ये ज्यादातर अर्क चाय तेल पाउडर आभूषण इत्यादि स्वरूप में विपरित होते हैं।

कुछ सामान्य उदाहरण इस प्रकार हैः–

01.पूर्णतया तुलसी पर आधारित औषधि उत्पाद

–डाबर तुलसी ड्रॉप्स.

–जीवा तुलसी ड्रॉप्स.

–अंजू तुलसी अर्क.

–बैद्यनाथ तुलसी अर्क.

–जारा तुलसी पाउडर.

–बेसिक आयुर्वेद तुलसी सीरप.

–आयुर्वेदिक पंच तुलसी ड्रॉप

–तुलसी का तेल.

–तुलसी बीज.

–आयुर्वेदिक तुलसी कैप्सूल.

02. तुलसी एवं अन्य के सम्मिश्रण से बने उत्पाद

–शिला तुलसी ड्रॉप्स.

–पतंजलि तुलसी शिला आदि.

तुलसी आधारित अन्य धार्मिक आध्यात्मिक उत्पाद

01.तुलसी के पत्र की माला इत्यादि।

02.तुलसी के लकड़ी की माला एवं गहनें इत्यादि।

अतः तुलसी के व्यवसायिक महत्व के अनुसार, तुलसी पौधे को कृषि के माध्यम से, लघु स्तर, मध्यम स्तर, या वृहद स्तर पर, व्यवसायिक उत्पाद के रुप में एकत्रित किया जा सकता है एवं, विभिन्न व्यवसायिक माध्यमों से तुलसी पौधे की कृषि को, उचित आय का स्रोत भी बनाया जा सकता है।

तुलसी कृषि पद्धति

तुलसी कृषि पद्धति को निम्न चरणों द्वारा समझा जा सकता है–

खेत–मिट्टी तैयारी

तुलसी पौधे के अनुकूल क्षेत्र चयन उपरांत सर्वप्रथम उपजाऊ एवं पोषक मिट्टी की तैयारी की जानी चाहिए। तत्पश्चात, कृषि कार्य के पूर्व उचित समयकाल में खेत की जुताई (माह

जून–जुलाई) कर लेनी चाहिए एवं पश्चात, खरपतवार या अन्य रोगवर्धक वृद्धिनाशक अवांछित चीजों को कृषि मिट्टी से अलग कर देना चाहिए।

बीज बुवाई

वर्षा काल के दौरान समुचित समय पर बीजों की बुवाई की जानी चाहिए। बीजों को मिट्टी के अंदर लगभग 1 सेंटीमीटर गहराई में लगाना चाहिए।

धूप एवं सिंचाई

तुलसी के पौधे के लिए धूप आवश्यक होती है, साथ ही, इसे नियमित सिंचाई की भी अनिवार्यता रहती है जिससे कि, मिट्टी नम बनी रहे। किंतु इस बात का ध्यान भी रखना अनिवार्य है कि, धूप की मात्रा अधिक ना हो।

तुलसी कृषि को औसतन 6 घंटे की धूप प्रतिदिन अनुकूल होती है। साथ ही, खेत में जल भराव ना होने दें। यानी कि, अतिरिक्त जल निकासी की व्यवस्था होनी चाहिए।

खाद एवं दवा

तुलसी की खेती को आवश्यक पोषक तत्व आवश्यकता के अनुसार उर्वरक के माध्यम से देना चाहिए।

साथ ही यदि आवश्यक हो तो, रोग निदान हेतु कीटनाशक, फफूंदनाशक आदि का भी, उचित समय एवं उचित प्रकार से, छिड़काव भी करना चाहिए।

कृषि कटाई

कृषि कटाई से तात्पर्य यह है कि, सही समय पर, विकसित या परिपक्व तुलसी के पौधे से, पत्ती संग्रह, बीज संग्रह, अथवा लकड़ी संग्रह इत्यादि, करना चाहिए।

तुलसी कृषि आधारित संग्रहित उत्पाद संरक्षण

पत्ती संरक्षण

संग्रह की गई पत्तियों को अच्छे से धूप या तापीय वातावरण में सुखा लेना चाहिए। जिससे की, नमी की मात्रा पत्तियों में ना रह जावे ।

सुखा लेने के पश्चात उत्पाद को नमी रोधी पात्र जैसे कि प्लास्टिक थैली या कंटेनर में वायु निरोधी विधि से संग्रह कर लेना चाहिए एवं पश्चात, उचित प्रकार से भंडारित कर लेना चाहिए।

बीज संग्रहण एवं संरक्षण

चूंकि तुलसी का पौधा छोटा होता है एवं इसके बीज भी छोटे होते हैं।

अतः बीजों को संग्रह करने के लिए पौधे के नीचे पॉलिथीन या कपड़ा बिछाकर, तैयार बीजों को पुष्प पुंज से निकालना चाहिए। संग्रहित बीज से नमी की मात्रा सुखाकर इन्हें उचित पात्र में भंडारित करना चाहिए।

लकड़ी संग्रह

परिपक्वता के पश्चात सुखे हुए तुलसी पौधों को काटकर या मिट्टी को नम दलदली बनाने के पश्चात उखाड़कर संग्रहित किया जाता है एवं साफ सफाई के उपरांत, उचित तथा आवश्यक विधि से भंडारित कर लिया जाता है।

तुलसी उत्पाद क्रय एवं विक्रय

तुलसी उत्पाद क्रय –विक्रय, अन्य उत्पादों की तरह ही, किया जा सकता है।

यह कार्य स्थानीय शासकीय विपणन केंद्र के माध्यम से, कृषि उत्पाद को विपणित किया जा सकता है।

साथ ही, विभिन्न प्रचलित प्रचार–प्रसार माध्यमों के द्वारा भी, तुलसी उत्पाद का विक्रय उचित क्रेता को एवं आवश्यक उत्पाद का क्रय यथोचित विक्रेता से किया जा सकता है।

तुलसी पौधे के व्यावसायिक खेती के प्रमुख एवं महत्वपूर्ण पहलू निम्नलिखित प्रकार से हैः–

1. ''स्थान चयन'':

मध्य प्रदेश जैसे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का चयन करें जहाँ अच्छी जल निकासी वाली, दोमट मिट्टी (पीएच 6–7.5) और 18–30 डिग्री का औसत तापमान हो।

विस्तृत, रीवा की तमसा नदी से निकटता बड़े पैमाने पर खेती के लिए आदर्श सिंचाई प्रदान करती है।

2. ''विविधता का चुनाव'':

उच्च पत्ती उपज (1–2 टन प्रति हेक्टेयर) के लिए रामा और श्यामा तुलसी को प्राथमिकता दी जाती है।

विस्तारित, कपूर तुलसी अपनी उच्च यूजेनॉल सामग्री के कारण आवश्यक तेल उत्पादन के लिए रीवा में लोकप्रियता प्राप्त कर रही है।

3. ''प्रवर्धन'':

तेजी से बढ़ने के लिए बीज या तने की कटिंग (10–15 सेमी) का प्रयोग करें एवं '40 गुणित 40' सेमी की दूरी पर पौधे लगाएँ।

मध्य प्रदेश में, संकर किस्मों का सूखा प्रतिरोधक क्षमता के लिए परीक्षण किया जा रहा है, जिससे रीवा के अनियमित वर्षा वाले क्षेत्रों को लाभ मिल रहा है।

4. ''उर्वरक'':

जैविक खाद (10 टन प्रति हेक्टेयर) और एनपीके उर्वरक (120:60:60 किग्रा प्रति हेक्टेयर) डालें।

रीवा में सोयाबीन जैसी फलियों के साथ तुलसी की विस्तारित, अंतर–फसल लगाने से मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती है, जिससे लागत कम होती है।

5. ''सिंचाई और देखभाल'':

ड्रिप सिंचाई जल दक्षता सुनिश्चित करती है। पत्तियों की वृद्धि बढ़ाने के लिए हर 6–8 हफ्ते में छंटाई करें।

रीवा के किसान स्थायी सिंचाई के लिए सौर ऊर्जा से चलने वाले पंपों का उपयोग करते हैं।

6. ''कटाई'':

90 दिनों के बाद पत्तियों को इकट्ठा करें, साल में 3–4 बार एवं फूल आने के बाद बीज इकट्ठा करें।

छाया में फैली हुई पत्तियों को सुखाने से औषधीय यौगिक संरक्षित रहते हैं, यह मध्य प्रदेश की हर्बल सहकारी समितियों द्वारा अपनाई गई एक प्रथा है।

7. ''अर्थशास्त्र'':

रूपये 50,000 प्रति हेक्टेयर के शुरुआती निवेश से पत्तियों और तेलों से रूपये 1–2 लाख की आय होती है।

विस्तार के बाद, रीवा के किसान दवा कंपनियों को तेल निर्यात करते हैं और 20 से 30 प्रतिशत तक का लाभ कमाते हैं।

स्थायित्व और रोजगारः–

व्यावसायिक खेती जैविक पद्धतियों को बढ़ावा देती है और रसायनों के उपयोग को कम करती है।

रीवा में, महिला स्वयं सहायता समूहों को तुलसी से चाय और पाउडर बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे रोजगार को बढ़ावा मिलता है।

मध्य प्रदेश का वन विभाग सामाजिक वानिकी लक्ष्यों के अनुरूप, आदिवासी क्षेत्रों में तुलसी के बागानों को बढ़ावा देता है।

बाजार संभावनाः–

तुलसी आधारित उत्पादों (चाय, तेल, कैप्सूल) की भारत में माँग बढ़ रही है और यूरोप तथा दक्षिण–पूर्व एशिया को निर्यात किया जा रहा है।

विस्तार के साथ, रीवा के किसान आवश्यक तेलों के आसवन के लिए सहकारी समितियाँ बना सकते हैं और भारत के आयुष मंत्रालय की पहलों के माध्यम से वैश्विक बाजारों से जुड़ सकते हैं।

तुलसी की खेती परम्परा को आर्थिक सशक्तिकरण के साथ जोड़ती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि इसकी पवित्र विरासत आधुनिक संदर्भों में भी फलती–फूलती रहे।

तुलसी की सतत मांग एवं पूर्ति समन्वयक तुलसी कृषि तथा कृषि के माध्यम से व्यवसायिक प्रयोजन, मानव समाज के साथ ही पर्यावरण के लिए भी हितकर है।

11.तुलसी एवं निधिवन वृंदावन

निधिवन, पवित्र तुलसी पौधे को समर्पित एक धार्मिक स्थल है जो कि, वृंदावन में स्थित है। वृंदावन, श्री कृष्ण भक्ति को पूर्णतः समर्पित, भारत वर्ष राष्ट्र के उत्तर प्रदेश राज्य अंतर्गत मथुरा नामक शहर में अवस्थित है।

वृंदावन, जहां कि, कृष्ण जी का जन्म से लेकर निरंतर वास माना जाता है। यह स्थान अत्यंत पावन एवं धार्मिकता से ओतप्रोत है।

श्री ब्रह्म वैवर्त पुराण के प्रकृति खंड में भगवान द्वारा कथित तुलसी स्त्रोत में वर्णित यह श्लोक :–

पुरा बभूव या देवी, त्वादो वृंदावने वने।

तेन वृंदावनी ख्याता, सौभाग्यां तां भजाम्यहम ।।

उपरोक्त वर्णित श्लोक स्पष्ट करता है कि –

हे सर्वत्र व्यापित वृंदावन वन रूपी वृंदावन की देवी वृंदा, सौभाग्य एवं ख्याति प्राप्ति हेतु हम आपको भजते पूजते हैं।

सर्वप्रथम वृंदावन की बात करें जिसका शाब्दिक अर्थ होता है ''वृंदा'' अर्थात तुलसी पौधे के पूर्व जन्म का स्वरूप एवं ''वन''। अतः वृंदावन का सरल अर्थ हुआ तुलसी पौधे का वन।

इसी प्रसंग में एक श्लोक अंश है जो कि प्रायः पवित्र तुलसी की महिमा में कहा जाता हैः –

// नमस्ते ,

तुलसी,

कृष्णा प्रिये,

वृंदावनीश्वरी, //

यह श्लोक वृंदा अर्थात तुलसी को, वृंदावन की रानी, और, कृ ष्ण की प्रिय के रूप में, संदर्भित करता है।

निधिवन में जन्माष्टमी, राधाष्टमी, होली, शरद पूर्णिमा, कार्तिक पूर्णिमा, आदि अवसरों पर, विशेष पर्व–त्यौहार मनाया जाता है।

निधिवन में, श्री राधा–कृष्ण जी के साथ–साथ, तुलसी वृक्ष की भी पूजा की जाती है।

''पौराणिक महत्व'':

ब्रह्म वैवर्त पुराण के अनुसार, तुलसी के रूप में अवतरित वृंदा, वृंदावन के आध्यात्मिक परिदृश्य का केंद्र हैं।

कृष्ण हर रात रास लीला करते हैं, जिसमें तुलसी के पौधे गोपियों का रूप धारण कर लेते हैं।

स्थानीय मान्यता के अनुसार, निधिवन में रात्रि में प्रवेश वर्जित है, क्योंकि यह दिव्य नृत्य अदृश्य रूप से चलता रहता है, जिससे तुलसी की पवित्र आभा बनी रहती है।

वृंदावन में स्थित निधिवन को, राधा और कृष्ण तथा राधा जी की सखी गोपियों की लीलाओं को समर्पित, एक पवित्र स्थल के रूप में माना जाता है।

इन्हीं कारणों से, किसी को भी रात के समय में निधिवन के अंदर प्रवेश की अनुमति नहीं है।

निधिवन प्रांगण तुलसी वृक्ष से, विशेषकर, पुराने एवं बड़े तुलसी वृक्ष से बने वन के लिए, जाना जाता है।

यहां की एक और विशेषता है कि, निधिवन में प्रायः बड़े एवं जोड़े में तुलसी के वृक्ष पाए जाते हैं।

तुलसी के पौधों (वृक्षों) के साथ–साथ निधिवन प्रांगण में, रंगमहल नामक एक मंदिर स्थल एवं बंसी चोर राधा मंदिर नामक दूसरा स्थल अवस्थित है।

इसके साथ ही प्रांगण अंतर्गत ही, स्वामी हरिदास जी को समर्पित एक तीर्थ स्थल भी है।

स्वामी हरिदास जी की प्रसिद्धि है कि उन्होंने अपनी पूरी भक्ति के साथ श्री बांके बिहारी जी की एक मूर्ति बनाई थी।

अतः यह स्पष्ट है कि, निधिवन एक प्रकार से तुलसी वन है एवं, जैसे की, तुलसी को अद्वितीया की संज्ञा प्राप्त है ठीक उसी प्रकार से, निधिवन पूरे विश्व में अपने प्रकार का एक मात्र स्थान है।

निधिवन में स्थित रंगमहल मंदिर की मान्यता है कि, इसी मंदिर में राधा जी और श्री कृष्ण रासलीला के पश्चात अपनी रात व्यतीत करते हैं।

वंशी चोर राधा मंदिर जैसा की नाम से ही स्पष्ट होता है, एक मान्यता अनुसार, इसी स्थान को राधा जी द्वारा श्री कृष्ण की वंशी चुराये जाने के रूप में जाना जाता है।

कहा जाता है कि, निधिवन की समस्त लताएं राधा जी की सखी गोपियां हैं जो एक दूसरे की बाहों में बाहें डाले खड़ी हैं और, जब आधी रात को निधिवन में राधा रानी जी बिहारी जी के साथ रासलीला करती हैं तो, वहां की लता पताएं गोपियां बन जाती हैं और तुलसी वृक्षों के चारों ओर रासलीला प्रस्तुत करती हैं। किंतु इस रासलीला को, कोई भी देख नहीं सकता।

दिन भर में हजारों बंदर, पक्षी, जीव–जंतु, निधिवन में रहते हैं किंतु, जैसे ही शाम होती है, सभी जीव–जंतु वहां से चले जाते हैं। एक परिंदा भी वहां नहीं रुकता। यहां तक कि, जमीन के अंदर के सभी जीव चींटी आदि भी, जमीन के अंदर चले जाते हैं।

एक धार्मिक मान्यता अनुसार यह व्याख्या है कि, राधा–कृष्ण की रासलीला को कोई देख नहीं सकता क्योंकि, रासलीला एक लौकिक जगत की लौकिक लीला नहीं अपितु अलौकिक जगत की परम दिव्यातिदिव्य लीला है।

इस पारलौकिक प्रसंग को सामान्य मनुष्य द्वारा प्रत्यक्ष देख पाना संभव नहीं है। केवल सिद्ध संतो द्वारा ही यदा कदा रासलीला प्रसंग की झलक देखने एवं गोपियों के नूपुर की ध्वनि सुनने की बात स्वीकार की गई है।

अतः संरक्षण प्रयास के अंतर्गत जैसा की निधिवन एक राष्ट्रीय संरक्षित स्थल है, जो कि अपने तुलसी पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित रखता है।

मध्य प्रदेश में भी निधिवन के मॉडल से प्रेरित होकर, वन विभाग आदिवासी क्षेत्रों में इसी तरह के वृक्षारोपण को बढ़ावा दे सकता है ताकि आध्यात्मिकता और पर्यावरण संरक्षण का मिश्रण हो सके।

हालांकि आज वर्तमान के आधुनिक वैज्ञानिक युग में पूर्णतया धार्मिक मान्यताओं को स्वीकार्य किया जाना सरल नहीं है किंतु, तुलसी पौधे की प्रमाणित दिव्यता तथा इसके पवित्र प्रभाव को स्वीकार्य करते हुए यह कहना सर्वथा उचित है कि, निधिवन अर्थात तुलसी वन, हम सभी के वर्तमान को प्राचीन धर्म संस्कृति द्वारा पुरस्कृत एक अनुपम धरोहर है।

12.तुलसी का धार्मिक महत्व

दिव्य गुणों से भरपूर, तुलसी एक पवित्र पौधा, भारत वर्ष में प्रायः आध्यात्मिक एवं आयुर्वेदिक महत्व के साथ ही, अपने धार्मिक प्रयोजन के लिए भी प्रायोजित होती है।

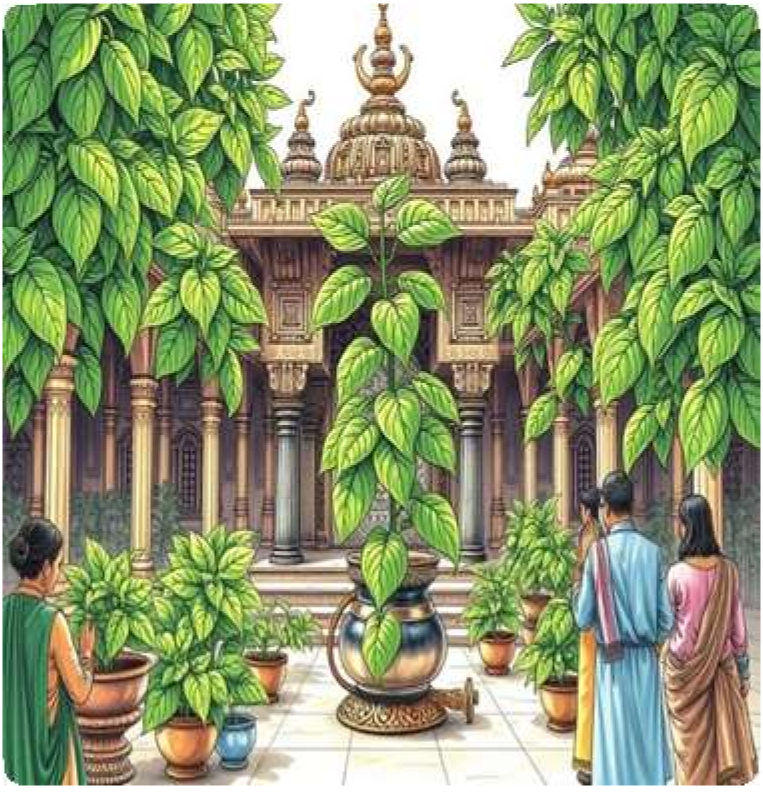

हिंदू धर्म में तुलसी का गहरा धार्मिक महत्व है, इसे देवी तुलसी के रूप में पूजा जाता है और यह दिव्य आशीर्वाद का माध्यम है। कलियुग में, तुलसी को यक्ष बत्यक्ष माना जाता है – भगवान विष्णु द्वारा प्रदत्त एक दिव्य पौधा – जो भक्तों को मातृ कृपा और पवित्रता प्रदान करता है।

अनुष्ठान और प्रथाएँः–

तुलसी दैनिक पूजा का केंद्रबिंदु है, जिसके पत्ते विष्णु और कृ ष्ण को अर्पित किए जाते हैं।

कार्तिक की देवउठनी एकादशी पर तुलसी विवाह, तुलसी और शालिग्राम के प्रतीकात्मक विवाह का उत्सव है, जो वैवाहिक सुख सुनिश्चित करता है।

रीवा में, कार्तिक के दौरान परिवार तुलसी के पौधों के चारों ओर घी के दीपक जलाते हैं और समृद्धि का आह्वान करने के लिए भजन गाते हैं। करवा चौथ जैसे त्योहारों पर महिलाएँ परिवार की खुशहाली के लिए तुलसी के चारों ओर पवित्र धागे बाँधती हैं।

शास्त्रीय आधारः–

विष्णु पुराण में कहा गया है कि तुलसी के पत्तों के बिना अर्पण अधूरा है, क्योंकि तुलसी भगवान विष्णु की कृपा का प्रतीक है।

स्कंद पुराण में कहा गया है कि तुलसी की पूजा करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पद्म पुराण में तुलसी के पौधे की परिक्रमा को सभी तीर्थों की यात्रा के समान बताया गया है।

मध्य प्रदेश में, विष्णु मंदिरों में तुलसी पूजा के दौरान पुजारी इन ग्रंथों का पाठ करते हैं।

त्यौहारः—

तुलसी दिवाली, होली और जन्माष्टमी का अभिन्न अंग है। रीवा में, दिवाली के दौरान, नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर भगाने के लिए पूजा की थालियों में तुलसी के पत्ते रखे जाते हैं, जबकि होली में, शुद्धिकरण के लिए अनुष्ठानों में तुलसी युक्त जल का उपयोग किया जाता है।

सांस्कृतिक महत्वः—

घरों और मंदिरों में तुलसी की उपस्थिति पवित्रता का प्रतीक है।

मध्य प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में, बुरी आत्माओं से बचाव के लिए घर के प्रवेश द्वार पर तुलसी लगाई जाती है, रीवा में स्थानीय पंडित सामुदायिक पूजा के दौरान इस मान्यता को और पुष्ट करते हैं।

तुलसी का धार्मिक महत्व अनुष्ठानों से परे है, यह आध्यात्मिक शुद्धि और दिव्य संबंध प्रदान करता है, जिससे यह हिंदू पूजा का आधार बन जाता है, जो इसके धार्मिक महत्व और दिव्य आशीर्वाद पर जोर देता है।

धार्मिक यज्ञ अनुष्ठान से लेकर, श्री हरि के भोग समर्पण से होते हुए, शरीर तर्पण की क्रियाविधि तक, श्री तुलसी जी का विशेष धार्मिक महत्व निरंतर है।

कुछ हिंदू समुदाय पंथ विशेष तो ऐसे हैं जो कि, पूर्णतया, श्री तुलसी जी की सेवा एवं महिमा को समर्पित हैं।

उदाहरणार्थ– वैष्णव हिंदू धर्म एवं जैन धर्म समुदाय तुलसी को विशेष धार्मिक केंद्र मानते हुए, विभिन्न व्रत–त्योहार तथा यज्ञ, दान, तप, आदि क्रियाओं में सदैव तुलसी जी आधारित दल, कंठी, माला, इत्यादि का, श्रद्धापूर्वक धारण एवं संबंधित धर्म विधा का अनुसरण करते हैं।

तुलसी के धार्मिक महत्व के अनुरूप इसके कुछ अन्य धार्मिक नाम भी हैं जो कि, निम्न प्रकार से हैंः–

तुलसीः– अतुलनीय –अर्थात जिसकी किसी से तुलना ना हो।

अद्विितीयाः– एक ही रूप में अन्य दूसरे रूप में नहीं।

सुरसाः– देवों को भी प्रिय लगने वाली उत्तम एवं मधुर सुगंध युक्त।

देव दुंदुभीः– नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने वाली।

अपेताक्षरीः– जो सदैव दिव्य बनी रहे।

सुलभाः– सरलता से उपलब्ध होने वाली।

विष्णुवल्लभाः– श्री हरि विष्णु की पत्नी के रूप में।

हरी प्रियाः– विष्णु जी को अति प्रिय।

वैष्णवीः– श्री विष्णु जी का ही एक हिस्सा (अंश)।

चूंकि, तुलसी पौधे के धार्मिक महत्व एवं महिमा की व्याख्या अति बृहद एवं व्यापक है, अतः कुछ मूलभूत तथा तथ्य संकलन प्रस्तुति सार संक्षेप में संज्ञेय निम्न प्रकार से है :–

॰प्रत्येक धार्मिक प्रयोजन के प्रारंभ में या संकल्प में तुलसी का होना अनिवार्य बताया गया है। फिर चाहे धार्मिक प्रयोजन

अंतर्गत यज्ञ, दान, तप, तर्पण, आदि अथवा साधारण व्रत–पूजा अनुष्ठान आदि हो।

।परस्पर आमंत्रण–निमंत्रण व्यवहार के समय में, शुभता के प्रतीक स्वरूप तुलसी दल भी, सुपाड़ी, हल्दी, अक्षत, आदि के साथ–साथ, प्रदाय की जाती है।

।श्री विष्णु जी के भोग में रामा तुलसी के दल ही प्रस्तुत किए जाते हैं, एवं रामा तथा श्यामा तुलसी को एक साथ एक ही स्थान पर नहीं लगाया जाता।

।शिव जी को तुलसी दल कदापि नहीं चढ़ाया जाता है, एवं यदि आवश्यक हो तो तब ही, तुलसी जी का पुष्प (मंजरी) शिव जी को अर्पित किया जा सकता है ।

।तुलसी का पौधा घर के मुख्य प्रवेश द्वारा या आंगन में ही लगाना चाहिए। अन्यत्र लगाना श्रेयस्कर नहीं माना जाता है।

॰सोमवार रविवार और बुधवार के दिन एवं 2, 4, 6, 8, आदि सम संख्या मान में तुलसी पौधा नहीं लगाना चाहिए। अर्थात तुलसी का पौधा सदैव ही 1, 3, 5, 7, के विषम संख्या मान में ही लगाना चाहिए।

॰मंगलवार, शुक्रवार, पूर्णिमा, द्वादशी, पितृ पूजा, संध्या या रात्रि आदि के समय पर, तुलसी दल नहीं तोड़ना चाहिए। साथ ही, तुलसी के पत्ते नाखून से नहीं तोड़ने चाहिए, अपितु उंगलियों से तोड़ने चाहिए।

॰स्वयं से गिरे हुए तुलसी के पत्ते पूजा के लिए सबसे उपयुक्त बताएं गए हैं एवं यह भी कहा जाता है कि 7 दिवस तक तुलसी दल बासी नहीं होते हैं।

॰धार्मिक मान्यताओं के अनुसार चौत्र मास में कार्तिक मास में गुरुवार शुक्रवार को तुलसी का पौधा लगाना शुभ मना जाता है ।

॰रामा तुलसी की पूजा के दौरान 11 बार एवं श्यामा तुलसी पौधे की 21 बार परिक्रमा लगाई जाती है।

॰भगवान को तुलसी दल भोग में अर्पण करना पुण्यदाई माना जाता है भगवान के प्रसाद में तुलसी दल डालने के पीछे की किंवदंति है कि भगवान राम ने यह कहा था की हनुमान जी का पेट भरने के लिए उन्हें एक तुलसी का पत्र देना चाहिए जिससे उनकी भूख मिट जाए।

॰जिन घरों में शालिग्राम भगवान की पूजा सेवा की जाती है वहां तुलसी का दल श्री शालिग्राम जी को भोग में समर्पित करने के पश्चात ही भोजन करने के विधान का पालन किया जाता है।

इस प्रकार कुछ मूलभूत एवं सारगर्भित प्रसंग द्वारा यह प्रत्यक्ष है कि, आयुर्वेदिक, आध्यात्मिक, महत्व के साथ–साथ, दिव्य गुणों से परिपूर्ण तुलसी का पौधा पर्याप्त धार्मिक महत्व रखता है। अतः मानव जीवन के कल्याण कार्य में समर्पित तुलसी एक पवित्र पौधा पावन एवं पूजनीय है।

13.तुलसी महात्म्य विवेचन

तुलसी के दिव्य औषधीय गुणों की विशेषता एवं पवित्र धार्मिक प्रयोजन तो है ही, इनके साथ ही तुलसी, भारतीय धर्म के प्रमुख संरक्षक एवं पालक श्री हरि ठाकुर जी विष्णु जी को अति प्रिय मानी जाती है।

तुलसी पर कहा गया एक प्राचीन श्लोकः–

नमो मोक्ष प्रदे देवि नमः सम्पत्प्राप्तिके।।

तुलसी पातुमाम् नित्यं सर्वा पदभ्योपि सर्वदा

कीर्तिताऽपि स्मृतावापि पवित्रयति मानवम् ।।

हे मोक्ष देनेवाली देवी, हे धन देने वाली देवी, मैं आपको नमस्कार करता हूं। तुलसी हमेशा मेरी रक्षा करें और सभी आपदाओं से बचाए। आपका कीर्तन करने या स्मरण करने से भी, मनुष्य पवित्र हो जाता है।

"तुलसी यत्कृपा तेन विना नैव मोक्ष गतिः"

यह श्लोक अंश तुलसी महात्म्य को प्रस्तुत करता है। इसका शाब्दिक अर्थ है कि, तुलसी जी की कृपा के बिना, मोक्ष गति प्राप्त करना संभव नहीं है।

साथ ही, तुलसी की दल ,शाखा, मंजरी (फूल) तथा, जड़, और यहां तक कि, इसके जड़ की मिट्टी का भी, पौराणिक महत्व है।

भारतीय धार्मिक पुराणों, उपनिषदों, शास्त्रों आदि में वर्णित, इस तुलसी महात्म्य का सार संक्षेप संग्रह कुछ निम्न प्रकार से हैः–

–चूंकि, यथा विदित है कि, तुलसी पौधा पवित्र एवं पावन है, तथा तुलसी पौधे के रोपण अर्थात पवित्रारोपण से पुण्य लाभ का फल है एवं, जो पुण्य फल पवित्रारोपण अर्थात तुलसी का पौधा लगाने में है, तुलसी का महात्म्य कुछ ऐसा है कि,वही फल दर्शन में भी प्राप्त होता है।

—तुलसी महात्म्य कहने सुनने के प्रभाव से, प्राणी जन्म मरण के चक्र से छूट जाता है।

—जो तुलसी काष्ठ का चंदन, श्री कृष्ण भगवान को अर्पित करता है, और उनके श्री विग्रह में भक्ति पूर्वक लगाता है वो सदा ही, श्री हरि के समीप रमण करता है।

—तुलसी की लकड़ी की आंच में तैयार किये गए नैवेद्य को श्री कृष्ण जी को अर्पित करने पर, मेरू पर्वत के समान अन्नदान का फल प्राप्त होता है।

—जो भगवान को तुलसी काष्ठ से निर्मित धूप देता है, वह फल स्वरुप 100 यज्ञ अनुष्ठान और गोदान का फल प्राप्त करता है।

—तुलसी के जड़ की मिट्टी की महिमा है की, जो मनुष्य तुलसी मिट्टी लगाकर, श्री विष्णु जी का पूजन करता है, उसे, एक ही दिन में 100 दिनों के पूजन का फल मिलता है। साथ ही, जड़ की मिट्टी मिले जल से जो कोई भी स्नान करता है उसे, तीर्थ स्थल जल स्नान के समान, फल प्राप्त होता है।

—जो मनुष्य तुलसी की नई मंजरी (फूलों) से भगवान शिव की पूजा करता है, वह, जब तक की सूर्य, चंद्र, नक्षत्र आदि हैं तब तक, पुण्य का फल भोगता है।

–प्रतिदिन तुलसी दल से भगवान की पूजा करने पर व्यक्ति को धन प्राप्ति होती है एवं भयंकर रोगों से मुक्ति होती है तथा समस्त दुरमित्रों का विनाश होता है।

–तुलसी जी की मूर्ति संपूर्ण सिद्धियों को प्रदान करने वाली बताई गई है।

–श्राद्ध के अवसर पर, श्रावण मास में तथा, संक्रांति के दिन, तुलसी का पौधा लगाना अत्यंत पुण्यदायी है।

–तुलसी की जड़ में ब्रह्मा जी, मध्य भाग में भगवान विष्णु और, मंजरी में रुद्र देव का निवास माना गया है। इसी कारण से भगवान शिव को तुलसी की मंजरी अर्पित की जाती है।

–जिस घर या गांव या वन में तुलसी वृक्ष हो, वहां, श्री हरि विष्णु प्रसन्न चित्त हो कर निवास करते हैं।

–जिस घर आंगन में तुलसी का पौधा लगाया गया हो वहां, सदैव समृद्धि बनी रहती है।

–जहां तुलसी की सुगंध लेकर हवा चलती है, वहां की, दसों दिशाओं और आस–पास के जीव पवित्र होते हैं।

—विशेषतः शिव मंदिर में यदि तुलसी का वृक्ष लगाया जाए तो, उस तुलसी वृक्ष में से जितने बीज तैयार होते हैं, उतने ही युगों तक मनुष्य, श्री धाम और स्वर्ग लोक में निवास करता है।

–तुलसी महात्म्य में यहां तक माना जाता है कि, तुलसी वृक्ष के बगीचे का दर्शन या स्पर्श कर लेने मात्र से, प्राणियों के ब्रह्म हत्या समान पाप भी नष्ट हो जाते हैं।

–पुराणों में वर्णन है कि, तुलसी काष्ठ द्वारा यदि मृतक शरीर का दाह होता है तो वह विष्णु धाम को प्राप्त करता है। देवता आदि भी उसके आगमन पर पुष्प वर्षा करते हैं, एवं, श्री हरि स्वयं ऐसी पुण्य आत्मा को अपने धाम में साथ लेकर जाते हैं।

साथ ही, यदि केवल एक भी तुलसी काष्ठ का टुकड़ा अन्य लकड़ियों के साथ में हो तो भी समान पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

–तुलसी दल यानि कि पत्तियों को मिलाकर पिंड दान करने से वर्षों तक पितर शांत रहते हैं।

–तुलसी काष्ठ के प्रयोग से किए गए हवन आदि सर्व प्रकार से शुद्धि प्रदान करते हैं।

–तुलसी वन के समीप से गुजरने मात्र से मनुष्य के समस्त पूर्व पाप नष्ट होते हैं एवं तुलसी वन की छाया में रहने मात्र से पापी से पापी मनुष्य भी, श्री हरि विष्णु का आशीर्वाद प्राप्त करता है।

पुराणों में वर्णित तुलसी महात्म्य, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक आयामों का सम्मिश्रण करते हुए, तुलसी की दिव्य महिमा का गुणगान करता है। यह अध्याय पारंपरिक मान्यताओं और आधुनिक प्रमाणों के माध्यम से तुलसी की महानता का विश्लेषण करता है।

शास्त्रीय विश्लेषणः–

ऋग्वेद में तुलसी को अद्वितीय (अतुलनीय) कहा गया है, जो इसकी अद्वितीय पवित्रता पर प्रकाश डालता है। पद्म पुराण में तुलसी के पौधे की पूजा को सभी तीर्थ स्थलों की यात्रा के समान बताया गया है, जिससे आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है।

स्कंद पुराण में तुलसी को पापों को शुद्ध करने वाली बताया गया है, क्योंकि इसकी उपस्थिति मात्र से आत्मा शुद्ध हो जाती है।

रीवा में, पंडित तुलसी विवाह के दौरान इसकी दिव्य भूमिका पर जोर देने के लिए इन ग्रंथों का पाठ करते हैं।

आदिवासी परंपराएँः–

मध्य प्रदेश के सामाजिक वानिकी अधिकारी श्री कन्हैयालाल पांडे ने कुसुमी रेंज की 1974 की एक घटना साझा की, जहाँ गोंड समुदाय दफनाने की रस्मों में तुलसी के पत्तों और लकड़ी

का इस्तेमाल करते थे। मृत्यु के बाद, वे मृतक के मुँह में तुलसी डालते थे, यह मानते हुए कि इससे मोक्ष मिलता है।

विस्तारित रूप में, यह प्रथा गोंडों की अनुभव–आधारित जीवनशैली को दर्शाती है, जो औपचारिक शिक्षा से रहित लेकिन आध्यात्मिक आस्था से भरपूर है।

रीवा के आदिवासी इलाकों में भी ऐसी ही परंपराएँ प्रचलित हैं, जहाँ तुलसी ईश्वर तक पहुँचने के सेतु का प्रतीक है।

वैज्ञानिक प्रमाणः–

आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययन भी तुलसी पौधे के महात्म्य को प्रमाणित करते हैं।

इसके फाइटोकेमिकल्स (जैसे, यूजेनॉल, रोजमैरिनिक एसिड) तनाव कम करते हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं, जो स्वास्थ्य संवर्धन के वैदिक दावों के अनुरूप है।

एम्स जैसे भारतीय संस्थानों के विस्तृत शोध से पता चलता है कि तुलसी में सूजन–रोधी गुण हैं, जिससे इसकी महाऔषधि (महान औषधि) की उपाधि और पुष्ट होती है।

रीवा में, एकेएस जैसे विश्वविद्यालय आधुनिक चिकित्सा में तुलसी की क्षमता का अध्ययन कर रहे हैं, और परंपरा को विज्ञान के साथ जोड़ रहे हैं।

सांस्कृतिक प्रासंगिकताः–

मध्य प्रदेश में, त्योहारों के दौरान सामुदायिक प्रवचनों में तुलसी का महत्व है, जहाँ इसके आध्यात्मिक और औषधीय लाभों पर चर्चा की जाती है।

श्री मद् भागवत कथा वाचन के दौरान, अनुष्ठान के प्रारंभ से ही अनिवार्यतः तुलसी दल (पत्र), सूखा काष्ठ आादि का उपयोग किया जाता है।

प्रसाद वितरण में भी प्रमुख रूप से तुलसी प्रयुक्त होने के साथ–साथ सदैव ही, संबंधित भागवत कथा अध्याय खंड के व्याख्यान के समय प्रसंग प्रवाह में भी देवी वृंदा एवं तुलसी जी की महिमा का विस्तृत एवं प्रेम पूर्वक वर्णन किया जाता है।

रीवा के स्थानीय आश्रमों में तुलसी कथा सत्र आयोजित किए जाते हैं, जहाँ भक्ति और पर्यावरण चेतना को प्रेरित करने के लिए वृंदा की कहानियाँ सुनाई जाती हैं।

निष्कर्षः–

तुलसी का महात्म्य विश्वास और प्रमाण का सेतु है, प्राचीन ज्ञान को आधुनिक विज्ञान से जोड़ता है। आदिवासी रीति–रिवाजों और शास्त्रीय स्तुति में दिखाई देने वाली इसकी पवित्रता, रीवा और उसके बाहर भक्ति और स्वास्थ्य संबंधी प्रथाओं को प्रेरित करती रहती है।

अतएव, तुलसी एक पवित्र पौधा, आध्यात्मिक, आयुर्वेदिक, एवं धार्मिक प्रयोजन के साथ–साथ, मानव जीवन के लिए सब प्रकार से कल्याणकारी है तथा, मोक्ष दाता के रूप में प्रत्यक्ष एवं प्रस्तुत है जो कि, आदि पुरातन से लेकर आज वर्तमान तक होते हुए आगे भी दीर्घकाल तक, अपनी दिव्यता एवं पवित्रता रूपी वरदान से हम सभी के लिए, ईश्वरीय आशीर्वाद एवं मातृ तुल्य कृपा की सतत स्रोत नियमित है।

उपसंहार

चूंकि हम सब आज वर्तमान में शिक्षा आधारित मानव समाज में रह रहे हैं किंतु तुलसी के महत्व प्रकाश में एक घटना प्रसंग है जो कि श्री कन्हैयालाल पाण्डे (कन्हैया दास) शासकीय सेवक सामाजिक वानिकी वन विभाग मध्य प्रदेश जी के द्वारा कथित है, अनुकरणीय है।

यह प्रसंग पूर्णतया अनुभव आधारित जीवनशैली व्यतीत करने वाले वन्य क्षेत्र में निवासरत आदिवासी समाज पर केन्द्रित है।

श्री कन्हैयालाल पाण्डे जी के कथन अनुसार सन् 1974 के दौर में जबकि उनकी पदस्थिति वन विभाग के दूरस्थ आंचलिक जंगल क्षेत्र अंतर्गत कुसुमी रेंज में की गयी जहां पर मूल निवासी गोंड समाज लगभग 1000 की संख्या एवं 200 परिवार पुराने पारंपरिक तरीके के मिट्टी एवं घास–फूस से निर्मित घरों में छोटी–छोटी टोली के रुप में रह रहे थे।

गोंड समाज का जीवन पूर्णतः जंगल आधारित था। वे सभी शिक्षा ज्ञान से पूरी तरह वंचित थे तथा अनुभव आधारित जीवनशैली का पालन करते थे। इसी जीवन अनुक्रम में मृत्यु उपरांत की एक परंपरा थी जिसमें कि मृत जीवात्मा के दांत को चिमटे के सहारे उठाकर मुँह को खोल लिया जाता था तथा खोलने के पश्चात मुंह में तुलसी दल एवं तुलसी की लकड़ी प्रविष्ट कराई जाती थी। तत्पश्चात मृतक के शरीर को अंतिम सवरूप दे दिया जाता था।

तुलसी दल एवं तुलसी की लकड़ी के संबंध में उनकी मान्यता थी कि, तुलसी पवित्र होती है एवं मृतात्मा के मुंह में रखने से मुक्ति की प्राप्ति होती है।

अतएव, उपरोक्त प्रसंग तुलसी पौधे के परंपरागत रूप से भी पवित्र होने को प्रमाणित करता है।

पुस्तक के आगामी संशोधित संस्करण में यह प्रयास रहेगा कि कुछ और महत्वपूर्ण तथ्य संकलन जैसे कि रीवा के सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में तुलसी की भूमिका और वैश्विक हर्बल बाजारों में इसकी क्षमता आदि को आधुनिक शोध, पारंपरिक ज्ञान और धार्मिक उद्धरणों के साथ पिरोकर, *तुलसी – एक पवित्र पौधा* की आस्था,मान्यता एवं प्रमाण के मध्यस्थ सेतु को और अधिक सुदृढ़ किया जाय।

संदर्भ विषय–वस्तु

संदर्भः– 01. तुलसी सामान्य परिचय और 02. तुलसी पौधों की किस्मों के लिए संदर्भ।

1. ''''भारत के पवित्र पौधे'' नंदिता कृष्णा और एम. अमिरथालिंगम द्वारा''

– ''प्रकाशक'': पेंगुइन बुक्स इंडिया

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के वानस्पतिक विवरण (जैसे, ओसीमम सैंक्टम, लेमियासी परिवार) और किस्मों, जिसमें विकास चक्र और क्षेत्रीय वितरण शामिल है, का व्यापक परिचय प्रदान करता है, जो तुलसी के नाम, आवास और जीवन चक्र चरणों के अनुभाग के अवलोकन के साथ संरेखित होता है।

2. ''''भारतीय औषधीय पौधेः एक सचित्र शब्दकोश'' सीपी खरे द्वारा''

– ''प्रकाशक'': स्प्रिंगर इंडिया

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के वैज्ञानिक वर्गीकरण, किस्मों (जैसे, रामा, श्यामा) और विकास पहलुओं का विवरण, अंकुरण, वनस्पति विकास और बीज उत्पादन के विवरण का समर्थन करता है।

3. ''भारत सरकार द्वारा ''भारतीय आयुर्वेदिक फार्माकोपिया'' (खंड प)''

– ''प्रकाशक'': केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), भारत

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी (ओसीमम सैंक्टम) के वानस्पतिक और विविध विवरण प्रस्तुत करता है, जिसमें जीवन चक्र और क्षेत्रीय नाम शामिल हैं, जो सीधे परिचय और विकास चक्र स्पष्टीकरण का समर्थन करते हैं।

4. ''''तुलसी का पौधाः वनस्पति विज्ञान, खेती और उपयोग'' आर.के. शर्मा द्वारा''

– ''प्रकाशक'': साइंटिफिक पब्लिशर्स (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के वानस्पतिक परिवार, वंश और विकास चरणों (जैसे, 6–9 दिनों में अंकुरण) की व्याख्या करता है, जो बीज से लेकर क्षय तक के अनुभाग के विस्तृत चक्र से मेल खाता है।

5. ''दिनेश जाधव द्वारा ''भारत के औषधीय पौधे''''

– ''प्रकाशक'': साइंटिफिक पब्लिशर्स (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी की किस्मों, आवास (उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों) और जीवन चक्र को शामिल किया गया है, तथा एक सामान्य वनस्पति परिचय प्रदान किया गया है।

संदर्भः– 03. तुलसी के पौधे के प्रकार के लिए संदर्भ।
1. ''एल.डी. कपूर द्वारा ''आयुर्वेदिक औषधीय पौधों की पुस्तिका''''
– ''प्रकाशक'': सीआरसी प्रेस (भारतीय आयातकों के माध्यम से उपलब्ध)
– ''प्रासंगिकता'': औषधीय गुणों के साथ तुलसी के प्रकारों (जैसे, रामा, श्यामा, नींबू तुलसी) का वर्णन, पत्तियों, फूलों और लाभों (जैसे, प्रतिरक्षा में वृद्धि, पाचन में सहायता) पर मिलान विवरण।
2. ''''तुलसीः प्रकृति की मातृ औषधि'' बलबीर सिंह द्वारा''
''प्रकाश – क'': इंटरनेशनल बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स (भारत)
– ''प्रासंगिकता'': लौंग तुलसी, विक्स तुलसी जैसी किस्मों और उनके उपयोगों (जैसे, सर्दी से राहत, तनाव में कमी) का विवरण, अनुभाग के स्वास्थ्य लाभ और सावधानियों का समर्थन करता है।
3. ''भारतीय औषधि निर्माता संघ द्वारा ''भारतीय हर्बल फार्माकोपिया''''
– ''प्रकाशक'': भारतीय औषधि निर्माता संघ (आईडीएमए), भारत
– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के प्रकारों (जैसे, होरी, कपूर तुलसी) को रासायनिक संरचना और औषधीय उपयोगों के साथ सूचीबद्ध किया गया है, जो विरोधी भड़काऊ गुणों जैसे लाभों के साथ संरेखित है।
4. ''''भारत में औषधीय पौधे'' टी. पुल्लैया द्वारा''
– ''प्रकाशक'': रीजेंसी पब्लिकेशंस (भारत)
– ''प्रासंगिकता'': इसमें सफेद तुलसी और मरवा तुलसी जैसी किस्मों को शामिल किया गया है, जिनके उपयोग (जैसे, मच्छर भगाने वाली दवा, विषनाशक) इस अनुभाग में दिए गए विस्तृत लाभों से मेल खाते हैं।
5. ''''द इनसाइक्लोपीडिया ऑफ मेडिसिनल प्लांट्स'' लेखकः शेवेलियर एंड्रयू''
– ''प्रकाशक'': डीके इंडिया (भारतीय संस्करण)
– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के प्रकारों (जैसे, नींबू, लौंग तुलसी) का गुणों और सावधानियों के साथ वर्णन, अनुभाग के स्वास्थ्य अनुप्रयोगों का समर्थन करता है।

संदर्भः– 04. तुलसी आध्यात्मिक वृक्ष और 05. तुलसी पवित्र पौधा के लिए संदर्भ।
1. ''''भारत के पवित्र पौधे'' नंदिता कृष्णा और एम. अमिरथालिंगम द्वारा''
– ''प्रकाशक'': पेंगुइन बुक्स इंडिया
– ''प्रासंगिकता'': वेदों, पुराणों और मिथकों (उदाहरण के लिए, वृंदा अवतार, तुलसी विवाह) में तुलसी की आध्यात्मिक भूमिका को समझाता है, अद्वितीय और समुद्र मंथन के मिलान विवरण।
2. ''''तुलसीः जीवन का अमृत'' वैद्य आत्रेय स्मिथ द्वारा''
– ''प्रकाशक'': मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स (भारत)
– ''प्रासंगिकता'': धर्मग्रंथों (जैसे, ऋग्वेद, अथर्ववेद) और मिथकों (वृंदा–विष्णु श्राप) में तुलसी के दिव्य गुणों का विवरण, आध्यात्मिक वृक्ष कथा का समर्थन करता है।

3. ''''देवी भागवत पुराण'' (अंग्रेजी अनुवाद) स्वामी विज्ञानानंद द्वारा''
– ''प्रकाशक'': मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स (भारत)
– ''प्रासंगिकता'': वृंदा के तुलसी के रूप में अवतार और समुद्र मंथन का वर्णन, सीधे पौराणिक व्याख्याओं और पवित्र स्थिति का समर्थन करता है।

4. ''तुलसीदास द्वारा लिखित ''श्री राम चरित मानस'' (अंग्रेजी अनुवाद) (आरसी प्रसाद द्वारा अनुवादित)''
– ''प्रकाशक'': मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स (भारत)
– ''प्रासंगिकता'': इसमें विभीषण के घर में तुलसी का सुंदरकांड संदर्भ शामिल है, जो रामायण में इसके आध्यात्मिक प्रतीकवाद पर प्रकाश डालता है।

5. ''स्वामी प्रभवानंद द्वारा ''भारत की आध्यात्मिक विरासत''''
– ''प्रकाशक'': रामकृष्ण मठ (भारत)
– ''प्रासंगिकता'': वेदों और पुराणों में आध्यात्मिक पौधे के रूप में तुलसी के स्थान पर चर्चा, अद्वितीय और अवतार कथाओं के साथ संरेखित।

संदर्भः– 06. तुलसी के दिव्य गुणों के लिए संदर्भ।

1. ''''तुलसीः प्रकृति की मातृ औषधि'' बलबीर सिंह द्वारा''
– ''प्रकाशक'': इंटरनेशनल बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स (भारत)
– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के दिव्य गुणों (जैसे, सकारात्मक ऊर्जा, यूजेनॉल के माध्यम से तनाव में कमी) की व्याख्या करता है, तथा इसके पोषण, शुद्धिकरण की भूमिका पर अनुभाग के जोर का समर्थन करता है।

2. ''''आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियाँः पारंपरिक भारतीय चिकित्सा के उपचारात्मक पौधों के लिए एक नैदानिक मार्गदर्शिका'' प्रेमिला एम.एस. द्वारा''
– ''प्रकाशक'': हॉवर्थ प्रेस (भारतीय आयातकों के माध्यम से उपलब्ध)
– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के एडाप्टोजेनिक गुणों (जैसे, तनाव से राहत, कीट विकर्षक एडाप्टिंस) का विवरण, जो नकारात्मकता में कमी जैसे दिव्य गुणों के साथ संरेखित है।

3. ''''द योगा ऑफ हर्ब्सः एन आयुर्वेदिक गाइड टू हर्बल मेडिसिन'' डेविड फ्रॉली और वसंत लाड द्वारा''
– ''प्रकाशक'': मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स (भारत)
– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के आध्यात्मिक और स्वास्थ्य गुणों (जैसे, सकारात्मक ऊर्जा, दीर्घायु) का वर्णन करता है, जो तुलसी को ''दिव्य वृक्ष'' के रूप में देखने के अनुभाग के दृष्टिकोण का समर्थन करता है।

4. ''''औषधीय पौधेः एक सचित्र और वर्णनात्मक मार्गदर्शिका'' बीपी पांडे द्वारा''
– ''प्रकाशक'': एस. चंद पब्लिशिंग (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': इसमें तुलसी की नकारात्मक ऊर्जा और विकर्षक गुणों को शामिल किया गया है, जिसमें भविष्य की संभावनाएं (जैसे, प्रकाश संश्लेषक लाभ) शामिल हैं, जो दिव्य विशेषताओं के साथ संरेखित हैं।

5. ''''हर्बल मेडिसिनः बायोमॉलिक्युलर और क्लिनिकल पहलू'' आइरिस एफएफ बेन्जी और सिसी वचेल–गैलोर द्वारा''

– ''प्रकाशक'': सीआरसी प्रेस (भारतीय आयातकों के माध्यम से उपलब्ध)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के यौगिकों (जैसे, तनाव से राहत के लिए यूजेनॉल) के बारे में बताया गया है, जो सकारात्मकता और स्वास्थ्य वृद्धि जैसे दिव्य गुणों का समर्थन करते हैं।

संदर्भः– 07. तुलसी आयुर्वेदिक महत्व।

1. ''एल.डी. कपूर द्वारा ''आयुर्वेदिक औषधीय पौधों की पुस्तिका''''

– ''प्रकाशक'': सीआरसी प्रेस (भारतीय आयातकों के माध्यम से उपलब्ध)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के आयुर्वेदिक उपयोगों (जैसे, वात–कफ शामक, पाचन सहायक) का विवरण, सावधानियों के साथ, अनुभाग के लाभों और विधियों से मेल खाता है।

2. ''भारत सरकार द्वारा ''भारतीय आयुर्वेदिक फार्माकोपिया'' (खंड ١)''

– ''प्रकाशक'': सीसीआरएएस, भारत

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी को रोगों (जैसे, श्वसन, त्वचा) के लिए महाऔषधि के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, उपयोग (पत्तियां, तेल, पाउडर) के साथ, अनुभाग के आयुर्वेदिक महत्व का समर्थन करता है।

3. ''''द योगा ऑफ हर्ब्सः एन आयुर्वेदिक गाइड टू हर्बल मेडिसिन'' डेविड फ्रॉली और वसंत लाड द्वारा''

– ''प्रकाशक'': मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के लाभों (जैसे, प्रतिरक्षा, तनाव में कमी) और सावधानियों (जैसे, गर्भावस्था) को समझाया गया है, जो अनुभाग के विस्तृत उपयोगों के साथ संरेखित है।

4. ''''भारतीय औषधीय पौधे'' सीपी खरे द्वारा''

– ''प्रकाशक'': स्प्रिंगर इंडिया

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी की आयुर्वेदिक भूमिकाओं (जैसे, विष–निरोधक, मानसिक स्वास्थ्य) को विधियों और सावधानियों के साथ शामिल किया गया है, जो अनुभाग की व्यापक सूची से मेल खाता है।

5. ''''आयुर्वेदः आत्म–चिकित्सा का विज्ञान'' – वसंत लाड द्वारा''

– ''प्रकाशक'': मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी को वात–कफ के लिए एक संतुलित जड़ी बूटी के रूप में वर्णित किया गया है, जिसका उपयोग पाचन और श्वसन संबंधी समस्याओं के लिए किया जाता है, जो अनुभाग के आयुर्वेदिक फोकस का समर्थन करता है।

संदर्भः– 08. तुलसी और आधुनिक चिकित्सा।

1. ''''तुलसी – ओसीमम सैंक्टमः सभी कारणों के लिए एक जड़ी बूटी'' यूजीन सेबेस्टियन जे. निदिरी द्वारा''

– ''प्रकाशक'': जर्नल ऑफ आयुर्वेद एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन (ओपन एक्सेस, भारत)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के आधुनिक लाभों (जैसे, श्वसन, संक्रमण) और फाइटोकेमिकल्स (यूजेनॉल, लिनालूल) का विवरण, अनुभाग के विश्लेषण से मेल खाता है।

2. ''''ओसीमम सैंक्टम लिन. चिकित्सीय अनुप्रयोगों के लिए एक जलाशय संयंत्र'' पी. प्रकाश और नीलू गुप्ता द्वारा''

– ''प्रकाशक'': फार्माकोग्नॉसी रिव्यूज (ओपन एक्सेस, भारत)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के यौगिकों (जैसे, थाइमोल, सिट्रल) और लाभों (जैसे, एंटी–ऑक्सीडेंट, एंटी–वायरल) की व्याख्या करता है, तथा अनुभाग के आधुनिक चिकित्सा उपयोगों का समर्थन करता है।

3. ''''जैव ईंधनः जैव प्रौद्योगिकी, रसायन विज्ञान और सतत विकास'' डेविड एम. मूसडेल द्वारा''

– ''प्रकाशक'': सीआरसी प्रेस (भारतीय आयातकों के माध्यम से उपलब्ध)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के फाइटोकेमिकल्स और आधुनिक अनुप्रयोगों (जैसे, तनाव से राहत, टाइप–2 मधुमेह) को शामिल किया गया है, जो अनुभाग के साक्ष्य–आधारित लाभों के साथ संरेखित है।

4. ''''तुलसी, रोजमेरी और काली मिर्च का सांस्कृतिक और औषधीय महत्व'' ख्लेखक खोज में निर्दिष्ट नहीं हैं, लेकिन ैत्छ से,''

– ''प्रकाशक'': एसएसआरएन (ओपन एक्सेस, भारत)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के आधुनिक औषधीय उपयोगों और किस्मों पर चर्चा, अनुभाग के फाइटोकेमिकल विखंडन और स्वास्थ्य लाभों का समर्थन।

5. ''''आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियाँः पारंपरिक भारतीय चिकित्सा के उपचारात्मक पौधों के लिए एक नैदानिक मार्गदर्शिका'' प्रेमिला एम.एस. द्वारा''

– ''प्रकाशक'': हॉवर्थ प्रेस (भारतीय आयातकों के माध्यम से उपलब्ध)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी के आयुर्वेदिक और आधुनिक उपयोगों (जैसे, सूजनरोधी) को फाइटोकेमिकल विवरणों के साथ जोड़ता है, जो अनुभाग के विश्लेषण के साथ संरेखित है।

संदर्भः– 09. तुलसी और वृक्षारोपण।

''संदर्भ'':

1. ''''औषधीय पौधेः खेती और उपयोग'' एच. पांडा द्वारा''

– ''प्रकाशक'': राष्ट्रीय औद्योगिक अनुसंधान संस्थान (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': बीज चक्र और खेत की तैयारी का विवरण।

2. ''''औषधीय एवं सुगंधित फसलों की खेती'' एए फारूकी एवं बीएस श्रीरामु द्वारा''

– ''प्रकाशक'': यूनिवर्सिटीज प्रेस (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': बुवाई और कीट नियंत्रण विधियों को शामिल करता है।

3. ''''उपयोग सहित औषधीय जड़ी बूटियों पर पुस्तिका'' एच. पांडा द्वारा''

– ''प्रकाशक'': एशिया पैसिफिक बिजनेस प्रेस (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': देखभाल और प्रसार तकनीकों की व्याख्या करता है।

4. ''भारतीय औषधि निर्माता संघ द्वारा ''भारतीय हर्बल फार्माकोपिया''''

– ''प्रकाशक'': आईडीएमए (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': बीज भंडारण के लिए मानक प्रदान करता है।

5. ''''द इनसाइक्लोपीडिया ऑफ मेडिसिनल प्लांट्स'' लेखकः शेवेलियर एंड्रयू''

– ''प्रकाशक'': डीके इंडिया

– ''प्रासंगिकता'': वृक्षारोपण के पर्यावरणीय लाभों का विवरण।

संदर्भः– 10. तुलसी की व्यावसायिक खेती।

''संदर्भ'':

1. ''''औषधीय पौधेः खेती और उपयोग'' एच. पांडा द्वारा''

– ''प्रकाशक'': राष्ट्रीय औद्योगिक अनुसंधान संस्थान (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': वाणिज्यिक कृषि अर्थशास्त्र को शामिल करता है।

2. ''''औषधीय एवं सुगंधित फसलों की खेती'' लेखकः ए.ए. फारूकी''

– ''प्रकाशक'': यूनिवर्सिटीज प्रेस (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': किस्म के चयन और कटाई का विवरण।

3. ''''उपयोग सहित औषधीय जड़ी बूटियों पर पुस्तिका'' एच. पांडा द्वारा''

– ''प्रकाशक'': एशिया पैसिफिक बिजनेस प्रेस (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': निषेचन और सिंचाई की व्याख्या करता है।

4. ''आईडीएमए द्वारा ''भारतीय हर्बल फार्माकोपिया''''

– ''प्रकाशक'': आईडीएमए (भारत)

– ''प्रासंगिकता'': वाणिज्यिक उत्पादन के लिए मानक।

5. ''''जैव ईंधनः जैव प्रौद्योगिकी और सतत विकास'' डेविड एम. मूसडेल द्वारा''

– ''प्रकाशक'': सीआरसी प्रेस (आयातित)

– ''प्रासंगिकता'': तुलसी तेल उत्पादन का अर्थशास्त्र।

संदर्भः– 11 तुलसी एवं निधिवन वृंदावन

''संदर्भ'':

1. ''''भारत के पवित्र पौधे'' नंदिता कृष्णा और एम. अमिरथालिंगम द्वारा''

– ''प्रकाशक'': पेंगुइन बुक्स इंडिया
– ''प्रासंगिकता'': विवरण निधिवन की तुलसी पौराणिक कथा।

2. ''गीता प्रेस द्वारा ''ब्रह्म वैवर्त पुराण'' (अनुवाद)''
   – ''प्रकाशक'': गीता प्रेस (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': वृन्दा का वृन्दावन के तुलसी कुंजों से संबंध।
3. ''स्वामी मुकुंदानंद द्वारा ''वृंदावनः ईश्वर की क्रीड़ास्थली''''
   – ''प्रकाशक'': जगन्नाथ पुरी प्रकाशन (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': रास लीला और तुलसी की भूमिका का वर्णन।
4. ''''हिन्दू पवित्र स्थान'' सुभद्रा सेन गुप्ता द्वारा''
   – ''प्रकाशक'': रूपा पब्लिकेशंस (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': निधिवन के संरक्षण प्रयास।
5. ''स्वामी प्रभवानंद द्वारा ''भारत की आध्यात्मिक विरासत''''
   – ''प्रकाशक'': रामकृष्ण मठ (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': तुलसी वृक्षों का आध्यात्मिक महत्व।

संदर्भः– 12. तुलसी का धार्मिक महत्व।

''संदर्भ'':

1. ''स्वामी चिन्मयानंद द्वारा ''हिंदू अनुष्ठान और दिनचर्या''''
   – ''प्रकाशक'': चिन्मय मिशन (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': तुलसी विवाह और दैनिक पूजा का विवरण।
2. ''''पद्म पुराण'' (अनुवाद) एनए देशपांडे द्वारा''
   – ''प्रकाशक'': मोतीलाल बनारसीदास (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': मोक्ष के लिए तुलसी पूजा।
3. ''''विष्णु पुराण'' (अनुवाद) एचएच विल्सन द्वारा''
   – ''प्रकाशक'': गरुड़ बुक्स (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': तुलसी भगवान विष्णु की पत्नी के रूप में।
4. ''''स्कंद पुराण'' (अनुवाद) जीवी टैगारे द्वारा''
   – ''प्रकाशक'': मोतीलाल बनारसीदास (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': तुलसी के आध्यात्मिक लाभ।
5. ''''तुलसी का सांस्कृतिक और व्यावसायिक मूल्य'' ए.के. सिंह द्वारा''
   – ''प्रकाशक'': पीएमसी (ओपन एक्सेस, भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': तुलसी से जुड़े धार्मिक त्यौहार।

संदर्भः– 13 तुलसी महात्म्य विवेचन

''संदर्भ'':

1. ''''पद्म पुराण'' (अनुवाद) एनए देशपांडे द्वारा''
   – ''प्रकाशक'': मोतीलाल बनारसीदास (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': तुलसी की आध्यात्मिक महिमा का विश्लेषण।
2. ''''ऋग्वेद'' (अनुवाद) स्वामी दयानंद सरस्वती''
   – ''प्रकाशक'': आर्य समाज (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': तुलसी के लिए अदवितीय संदर्भ।

3. ''''तुलसी – ओसीमम सैंक्टमः सभी कारणों के लिए एक जड़ी बूटी'' ईएसजे निदिरी द्वारा''
  – ''प्रकाशक'': पीएमसी (ओपन एक्सेस, भारत)
  – ''प्रासंगिकता'': महात्म्य का वैज्ञानिक सत्यापन।
4. ''स्वामी प्रभवानंद द्वारा ''भारत की आध्यात्मिक विरासत''''
  – ''प्रकाशक'': रामकृष्ण मठ (भारत)
  – ''प्रासंगिकता'': आस्था और सांस्कृतिक विश्लेषण का मिश्रण।
5. ''''भारत की जनजातीय विरासत'' एससी दुबे द्वारा''
  – ''प्रकाशक'': विकास पब्लिशिंग हाउस (भारत)
  – ''प्रासंगिकता'': गोंड अनुष्ठानों जैसी जनजातीय प्रथाओं का दस्तावेजीकरण।

अन्य महत्वपूर्ण संबंधित संदर्भः–
''संदर्भ'':
1. ''नंदिता कृष्णा द्वारा ''भारत के पवित्र पौधे''''
  – ''प्रकाशक'': पेंगुइन बुक्स इंडिया
  – ''प्रासंगिकता'': आध्यात्मिक परंपराओं में तुलसी को संदर्भित करता है।
2. ''स्वामी प्रभवानंद द्वारा ''भारत की आध्यात्मिक विरासत''''
  – ''प्रकाशक'': रामकृष्ण मठ (भारत)
  – ''प्रासंगिकता'': गुरु–शिष्य परंपराओं का वर्णन करता है।
3. ''स्वामी चिन्मयानंद द्वारा ''हिंदू अनुष्ठान और दिनचर्या''''
  – ''प्रकाशक'': चिन्मय मिशन (भारत)
  – ''प्रासंगिकता'': तुलसी कंठी प्रथाओं की व्याख्या करता है।
4. ''''तुलसीः जीवन का अमृत'' वैद्य आत्रेय स्मिथ द्वारा''
  – ''प्रकाशक'': मोतीलाल बनारसीदास (भारत)
  – ''प्रासंगिकता'': तुलसी के आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डाला गया।

''विशेष सारांश संबंधित संदर्भ'':
1. ''''भारत की जनजातीय विरासत'' एससी दुबे द्वारा''
  – ''प्रकाशक'': विकास पब्लिशिंग हाउस (भारत)
  – ''प्रासंगिकता'': तुलसी के साथ गोंड जनजातीय अनुष्ठानों का दस्तावेजीकरण।
2. ''नंदिता कृष्णा द्वारा ''भारत के पवित्र पौधे''''
  – ''प्रकाशक'': पेंगुइन बुक्स इंडिया
  – ''प्रासंगिकता'': तुलसी की सांस्कृतिक भूमिका को संदर्भित करता है।
3. ''''तुलसी – ओसीमम सैंक्टमः सभी कारणों के लिए एक जड़ी बूटी'' ईएसजे निदिरी द्वारा''
  – ''प्रकाशक'': पीएमसी (ओपन एक्सेस, भारत)
  – ''प्रासंगिकता'': पारंपरिक मान्यताओं के लिए वैज्ञानिक प्रमाण।

4. ''एस.के. जैन द्वारा ''हिंदू पवित्र पौधे''''
   – ''प्रकाशक'': भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण (भारत)
   – ''प्रासंगिकता'': तुलसी के पारंपरिक उपयोगों का विश्लेषण।

चित्र स्रोत

समस्त चित्रों को प्रासंगिक विषय अनुक्रम के समरूप कृत्रिम बौद्धिक चित्र निर्माता राफेल ए आई (जो कि प्रस्तुत किये गये वाक्य का अनुसरण करते हुए प्रयोगकर्ता आधिकारित संग्रहण योग्य चित्र प्रस्तुत करता है)

कृत्रिम बौद्धिक चित्र निर्माताः–

''एचटीटीपीः / /आरएपीएचएईएलआइ.ओआरजी / '' "http//raphaelai.org/"

एवं, प्रयोगकर्ताः–

''एएनएएनडीडीडीडब्लूआइएटदिरेटजीमेलडाटकाम'' "ananddwi@gmail.com"

सप्रेम धन्यवाद !

पुस्तक–
तुलसी एक पवित्र पौधा
लेखक–
आनन्द धर द्विवेदी
संपादक–
सुरेंद्र द्विवेदी
प्रकाशन वर्ष–
सितम्बर 2025
प्रकाशन–
लेखक स्व–प्रकाशन
प्रकाशक–
आनंद धर द्विवेदी
पता–
ग्राम तिलया, हनुमना, जिला मउगंज
रीवा मध्य प्रदेश
मोबाइल नम्बर–
+91–9981390093
ईमेल पता–
aadriti.prithudwivedi@gmail.com
ananddwi@gmail.com
वेबसाइट–
www.apasilicom.com

तुलसी – एक पवित्र पौधा

वर्षः 2025

लेखकः आनंद धर द्विवेदी

कॉपीराइटः ''कॉपीराइट –2025 आनंद धर द्विवेदी। सभी अधिकार सुरक्षित।''
आईएसबीएनः 978–93–344–3483–5

प्रकाशन–

लेखक स्व–प्रकाशन

प्रकाशक–आनंद धर द्विवेदी,पताः ग्राम–तिलया, पो,आ,–लासा, हनुमना, रीवा, म,प्र,. पिन–486335

+91–9981390093

मूल्यः 125रू